हरिभूमि
महेन्द्रगढ़-नारनौल भूमि
रोहतक, रविवार, 1 जून 2025

11 आरपीएस कॉलेज बलाना में टैलेंट हंट व स्कॉलरशिप...

12 सरल सर्वर ठप: हरियाणा के छात्र बेहाल, सीईटी व कॉलेज फॉर्म...

हरिभूमि की पहल को हर वर्ग ने सराहा, मिलकर करेंगे प्रयास तो तम्बाकू मुक्त होगा जिला

अधिकारी, राजनीति से जुड़े नेता, शिक्षक, पुलिस, महिला, समाजसेवी व युवाओं की रही अहम भागीदारी

हरिभूमि न्यूज. नारनौल

हरिभूमि की ओर से तम्बाकू निषेध हस्ताक्षर अभियान शनिवार बस स्टैंड परिसर में आयोजित किया गया। इस अभियान को सार्थक रूप देने के लिए जिला से जुड़े अधिकारी वर्ग, राजनीति से जुड़े नेता, शिक्षक, पुलिस, महिला, समाजसेवी व युवाओं की अहम भागीदारी रही। हरिभूमि की इस पहल को समर्थन देने और भविष्य में तम्बाकू से दूर रहने तथा अन्य को दूर रहने के लिए आह्वान भी किया। इस हस्ताक्षर अभियान में आए लोगों से बातचीत की जोकि इस प्रकार है।

- नारनौल बस स्टैंड पर हरिभूमि ने चलाया तम्बाकू निषेध हस्ताक्षर अभियान उमड़ी भीड़

जागरूक करने में अहम भूमिका

विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर हरिभूमि की पहल लोगों को जागरूक करने में अहम भूमिका अदा करेगी। इससे अधिक से अधिक लोगों को प्रेरित किया जा सकेगा।
–सुनील यादव वर्ग अनुदेशक आईटीआई नारनौल

हानिकारक है धूम्रपान

धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए बहुत ही हानिकारक है। हरिभूमि की पहल बहुत अच्छी है। हमें समय समय पर इस प्रकार की जागरूकता का प्रचार करना चाहिए।
–जितेंद्र यादव, इंचार्ज बस स्टैंड नारनौल

भावनाओं की करते है कद्र

हर साल हरिभूमि की इस पहल की वह कद्र करते है। समय के साथ बदलाव जरूरी है।
–दीवान सिंह इंचार्ज बस स्टैंड नारनौल

प्रेरणादायक पहल को साधुवाद

हरिभूमि की नशा विशेष तौर पर धूम्रपान के प्रति लोगों को बताना बहुत ही सराहनीय कार्य है। इसके द्वारा विशेष कर युवाओं में जागरूकता पैदा होगी। वो इस नशे से दूर होंगे। मैं हरिभूमि की इस प्रेरणादायक पहल को साधुवादा देता हूं। निश्चित तौर पर इससे समाज में एक क्रांति आएगी तथा युवा नशे से दूर होंगे।
–संतोष चौहान, डीईओ नारनौल

शरीर स्वस्थ्य रखना पहला धर्म

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम' अर्थातअपने शरीर को स्वस्थ रखना हमारा पहला धर्म है। इस उक्ति को चरितार्थ करते हुए आज विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर हरिभूमि टीम द्वारा युवकों को नशे के दुष्प्रभावों के बारे में सचेत किया जा रहा है। इस महान व पवित्र कार्य के लिए हरिभूमि परिवार प्रशंसा व बधाई का पात्र है।
–दलजीत शास्त्री, सेवानिवृत संस्कृत प्रवक्ता

समाज का विनाशकारी है नशा

आज विश्व तम्बाकू दिवस पर मैं सभी लोगों से निवेदन करता हूं कि आप आज के बाद तम्बाकू का सेवन ना करें और मैं तो कहता हूं किसी भी प्रकार का नशा ना करें। यह जीवन में बहुत ही हानिकारक है। नशा समाज का विनाशकारी है।
–श्यामलाल सैनी, चेयरमैन जीआईसीई कम्प्यूटर नारनौल

आवाज करें बुलंद

नशा और नशा बेचने वालों के खिलाफ हमेशा आवाज बुलंद करें। हरिभूमि द्वारा चलाया गया नशा मुक्ति जागरूकता अभियान एक सराहनीय कार्य है। वे लगातार इस प्रकार के जनहित कार्य करते रहें। –प्रो. डा. चंद्रमोहन नोडल अधिकारी पर्यावरण क्लब पीजी कॉलेज नारनौल

शरीर के प्रत्येक अंग पर पड़ता है गंभीर दुष्प्रभाव

समाज में तम्बाकू नामक जहर को बाहर निकालना है और समाज व देश के भविष्य कहे जाने वाले युवाओं को बचाना है। तम्बाकू के सेवन से जान लेवा बीमारियां जन्म लेती है जैसे सभी प्रकार के कैंसर, दिल की बीमारी इत्यादि। तम्बाकू व इसके उत्पादों के सेवन से शरीर के प्रत्येक अंग पर गंभीर दुष्प्रभाव होता है। –डा. दिनेश कुमार, नोडल अधिकारी एनटीसीपी स्वास्थ्य विभाग

तम्बाकू त्यागो परिवार के साथ खुशी से जीवन करों यापन

तम्बाकू को किसी भी रूप में स्वीकार ना करें। तम्बाकू त्याग करें और अपने परिवार के साथ खुशी पूर्वक लंबा जीवन यापन करें। जिला को तम्बाकू रहित बनाने में सहयोग करें। तम्बाकू छोड़ो जीवन अपनाओ, यहीं इस दिवस का मुख्य संदेश है। –निरीक्षक शारदा देवी, इंचार्ज महिला सुरक्षा जागरूकता टीम नारनौल

हरिभूमि के इस प्रयास में युवा आए आगे

जिला में जनहित से जुड़े मुद्दे हो या फिर छोटे से छोटे तबके की बात हो, हरिभूमि सदैव अग्रिणी है। समाजहित से जुड़ी इस नशाखोरी के खिलाफ हरिभूमि का यह प्रयास युवाओं को सही मार्ग पर लाने की राह का काम करेगा। हरिभूमि की इस मुहिम को वह अपने स्तर पर भी आगे बढ़ाएंगे।
–ठाकुर अतरलाल, बसपा नेता अटेली

तंबाकू सेवन सेहत के लिए हानिकारक होता है और इस खास दिन पर हरिभूमि अखबार ने लोगों को जागरूक करने की सराहनीय पहल की है। हर साल विश्व में हर साल करीब 54 लाख लोगों की मौत तंबाकू से होने वाली बीमारियों से हो जाती है। इसलिए इससे बचें।
-भूपेंद्र यादव, युवक

विश्व तंबाकू निषेध दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य तंबाकू के खतरों और स्वास्थ्य पर इसके नकारात्मक प्रभावों के प्रति लोगों में जागरूकता फैलाना है। आमजन को भी ऐसे कार्यक्रमों से प्रेरित होकर तंबाकू सेवन से दूर रहना चाहिए।
-कुलदीप सिंह, बस स्टैंड इंचार्ज, नारनौल

तंबाकू से होने वाले जानलेवा रोगों का शिकार होने से बचने के लिए इसका त्यागना बहुत ही आवश्यक है। आजकल के युवा तंबाकू की तरफ तेजी से आकर्षित हो रहे हैं और यह समाज एवं देश के लिए बड़ी घातक है। इसके परिणामों को गंभीरता से लेना होगा।
-अंतिमा, छात्रा

तंबाकू को जब सरकार ने निषेध घोषित कर रखा है तो इसका उत्पादन क्यों किया जा रहा है। इसका उत्पादन भी रोकना चाहिए। जब इसका निर्माण ही नहीं होगा और निर्माता कंपनियां बंद हो जाएंगी तो यह अपने आप रूक जाएगा। सरकार को अपनी पहल पर अमल भी करना चाहिए। -कृष्ण कंछल, महामंत्री, अग्रवाल सभा, नारनौल

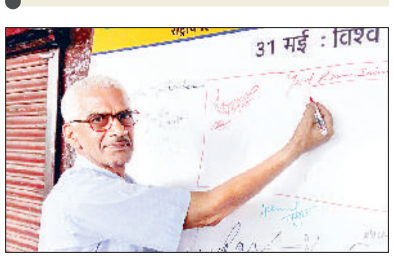

वर्षों से पढ़ाया और सिखाया जा रहा है कि तंबाकू का सेवन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, लेकिन यह जानकर भी हम सभी अनजान बने हुए हैं और इसका निरंतर सेवन कर रहे हैं। आजकल के युवा तो बीड़ी-सिगरेट ही नहीं, हुक्के को भी बढ़ावा देने लगे हैं, जो अपनी मौत को बुलावा दे रहे हैं।
-यादराम सैनी, पूर्व प्राचार्य

स्मोकिंग फेफड़ों के कैंसर का सबसे बड़ा कारण माना जाता है। लोग सिगार, हुक्का या पाइप के जरिये तंबाकू का सेवन करते हैं, उनमें भी फेफड़ों के कैंसर होने का खतरा बहुत ज्यादा होता है। सिगरेट या तंबाकू में निकोटीन नामक एक पदार्थ पाया जाता है, जो लोगों को इसका आदि बनाता है।
-संजीव यादव, वाइस चेयरमैन, नप नारनौल

तंबाकू का सेवन हानिकारक होता है और इससे शरीर में बीमारियां फैलती हैं। जो लोग तंबाकू सेवन करते हैं, उन्हें देखकर बच्चे भी बिगड़ते हैं और वह बड़े होकर गलत आदतों का शिकार होकर अपना व परिवार का जीवन बर्बाद कर देते हैं। इससे हर हाल में बचना चाहिए।
-बिशन सिंह सैनी, प्रधान सैनी सभा नारनौल

दैनिक हरिभूमि द्वारा इस दिन को मनाने के पीछे का मकसद लोगों को तंबाकू सेवन से होने वाले नुकसानों के बारे में जागरूक करना है। यह बहुत ही सराहनीय पहल है। तंबाकू स्वास्थ्य के लिए बहुत ही हानिकारक होता है। इसके सेवन से हर साल लाखों लोगों की दर्दनाक मौत हो जाती है।
-सिकंदर गहली, अध्यक्ष, सती माता वेलफेयर समिति, गहली

दुनियाभर में हर साल 31 मई को विश्व तंबाकू निषेध दिवस मनाया जाता है। इस दिन को मनाने का मकसद तंबाकू के खतरों के बारे में जागरूकता फैलाना है। हर साल होने वाली बीमारियों एवं मौतों से बचने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को तंबाकू का सेवन छोड़ना होगा, तभी तंबाकू रहित समाज की स्थापना हो सकेगी। हरिभूमि अखबार की पहल सराहनीय है।
-प्रदीप यादव, पूर्व डीएमएस

तंबाकू निषेध दिवस का आयोजन आमजन को इसके प्रति जागरूक करना है। हरिभूमि ने जागरूकता अभियान चलाकर समाज को शानदार संदेश देने का प्रयास किया है। तंबाकू छोड़ने के लिए यह कार्यक्रम समाज में प्रेरणा का कार्य करेगा। इससे बुजुर्ग एवं युवा सभी वर्ग के लोग प्रेरित होंगे और तंबाकू का सेवन न करने को संकल्पबद्ध होंगे।
-टींकू प्रधान, युवा साथी ग्रुप

तंबाकू रहित समाज की पहल बेहद सराहनीय है। तंबाकू का सेवन करना न केवल स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, बल्कि इससे परिवार पर भी बुरा असर पड़ता है। जिन घरों में लोग तंबाकू सेवन करते हैं, उन परिवारों के बच्चे भी बड़े होकर आसानी से इसकी गिरफ्त में आ जाते हैं। इससे बचें।
-हंसराज यादव, रोडवेज डिपो प्रधान नारनौल

तंबाकू युक्त सिगरेट पीने वाला व्यक्ति खुद के जीवन को संकट में डालने के साथ-साथ दूसरों का जीवन भी संकट में डालता है, क्योंकि सिगरेट के धुआं युक्त वायु में सांस लेने पर इसका बुरा असर दूसरे लोगों पर भी पड़ता है। इसलिए तंबाकू के सेवन से बचना चाहिए।
-दिनेश सैनी, सामाजिक कार्यकर्ता

तंबाकू स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। स्मोकिंग से सिर्फ फेफड़े के कैंसर का ही रिस्क नहीं बढ़ता, बल्कि इससे लीवर, अग्नाशय, पेट आदि के साथ-साथ शरीर के किसी भी हिस्से में कैंसर पैदा हो सकता है। इसलिए इसके सेवन से बचना चाहिए। हरिभूमि की पहल जरूर रंग लाएंगी। -संजय मान एडवोकेट, पूर्व प्राचार्य

तंबाकू रहित समाज की कल्पना कठिन अवश्य दिखती है, लेकिन नाममुकिन नहीं है। यदि सभी अपने हिस्से का योगदान दें तो यह परिकल्पना भी सच साबित हो सकती है। इससे बचने की आवश्यकता है।
-सुमित कुमार, पीआरओ पुलिस नारनौल

तंबाकू का सेवन करना शरीर के लिए हानिकारक होता है। इसके सेवन से कैंसर के साथ-साथ दिल की बीमारी होने का खतरा बढ़ जाता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को तंबाकू रहित समाज की स्थापना में योगदान देना चाहिए।
-प्रीतम बागड़ी, बस अड्डा इंचार्ज, नारनौल

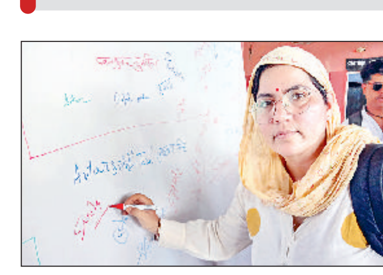

तंबाकू का उपयोग शरीर के लिए बेहद घातक होता है। इस दिन तंबाकू उपयोग के खतरों के प्रति जागरूक करने की हरिभूमि ने अनुकरणीय पहल की है। आमजन को भी इसमें भागेदारी निभानी चाहिए, तभी तंबाकू के नुकसान से बच सकेंगे।
-सुनीता, कृषि अधिकारी, नांगल चौधरी

तंबाकू सेवन के घातक परिणामों के प्रति लोगों में जागरूकता लाने की दिशा में इस तरह के आयोजन काफी सार्थक होते हैं। इससे लोगों में अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ती है और युवाओं को इस हवन में अपने हिस्से की आहुति डालनी चाहिए।
-कोमल सैनी, एनसीसी कैडेट

विश्व तंबाकू निषेध दिवस के जरिए दुनियाभर में जागरूकता फैलाई जा रही है। बस स्टैंड पर हरिभूमि ने यह कार्यक्रम आयोजित करके बड़ा सराहनीय कार्य किया है। इससे लोग जरूर प्रेरित होंगे।
-कशिश

तंबाकू युक्त समाज के गठन की दिशा में सरकार को चाहिए कि वह न केवल तंबाकू पर बैन लगाए, बल्कि तंबाकू युक्त पदार्थ तैयार करने वाली कंपनियों को भी बंद करें। जब उत्पाद निर्माता ही नहीं होगा तो लोग तंबाकू खाएंगे कैसे।
-ओसिन शुक्ला, छात्र

समाज में फैली इस सामाजिक विदूपदता की जड़ों को समाज से बिल्कुल ही समाप्त करना है, ताकि सम्पूर्ण समाज पूर्ण रूप से स्वस्थ रहें तथा युवा इस नशे से ओत प्रोत ना हो। आओ हम सब मिलकर ये प्रण करें। तम्बाकू को युवाओं से दूर करें।
–डा. ममता शर्मा, महिला कॉलेज नारनौल

सार्थक प्रयास से कई परिवार उजड़ने से बचेंगे

हरिभूमि के इस प्रयास के सार्थक होने से कई परिवार उजड़ने से बचेंगे। वह इस जागरूकता अभियान के लिए धन्यवाद देती है और आने वाली युवा पीढ़ी व वर्तमान में जो तम्बाकू का सेवन कर रहे है, उन्हें इस कार्यक्रम से प्रेरणा मिलेगी, ऐसी उम्मीद करती हूं।
–भारती सैनी जिला अध्यक्ष भाजपा महिला मोर्चा महेंद्रगढ़

हरिभूमि सदैव समाज हित के मुद्दों को उठा रहा

हरिभूमि ने आज जो तम्बाकू छोड़ने के लिए हस्ताक्षर अभियान चलाया है। यह एक अच्छी पहल है। हरिभूमि सदैव समाज हित के मुद्दों पर गंभीरता से कार्य करता है। नशे को छोड़ने और युवाओं को जोड़ने की इस पहल पर वह हरिभूमि परिवार को बधाई देती है।–डॉ. राजवती यादव, जिला अध्यक्ष कांग्रेस महिला मोर्चा महेंद्रगढ़

इस मामले में सरकार गंभीर

नशा के विरुद्ध नायब सरकार आए दिन फैसले ले रही है। प्रदेश के हर कोने में नशे की रोकथाम के लिए निरंतर अभियान चलाएं जा रहे है। ऐसे समय में हरिभूमि का यह प्रयास सोने पर सुहागा है। वह उनके इस प्रयास का समर्थन करते है।
–सीताराम यादव, पूर्व विधायक अटेली

चार साल पहले छोड़ा था तम्बाकू

आज से चार वर्ष पूर्व मैंने तम्बाकू यानी सिगरेट हुक्का छोड़ा था। मैं बहुत खुश हूं। आज से आप भी तम्बाकू का सेवन छोड़े। आज भी खुश रहेंगे। स्वस्थ रहोंगे मस्त रहोंगे। –तेजप्रकाश एडवोकेट, पूर्व अध्यक्ष छात्र संघ नारनौल कॉलेज

बुराई से दूर रहने का दिलाएं संकल्प

उन्हें पारिवारिक संस्कारों से किसी प्रकार का नशा न करने का संस्कार मिला। जिस कारण मैं अभी तक नशा से दूर हूं। आज के धूम्रपान निषेध दिवस पर मुझे प्रशन्नता है कि मैं अपने व्यवहार क्रियाकलापों और सद्प्रयासों से अनेक युवाओं व वरिष्ठजनों को इस बुराई से दूर रहने का संकल्प दिलवाया। –सत्यव्रत शास्त्री, निदेशक सांस्कृतिक अहीरवाल

संस्कारों को हर जनमानस तक फैलाएं

आज वर्तमान समाज में जिस प्रकार से नशा फैल रहा है, वो सिर्फ सोचने व विचार करने की बात नहीं बल्कि उस पर सम्पूर्ण समाज को चाहे वो युवा हो, मातृशक्ति हो, बुजुर्ग हो, जवान हो, किसान हो सभी को एकजुट होकर लड़ना होगा। मेरे संस्कारों और पृष्ठभूमि में नशे के खिलाफ संस्कार सिखाएं गए है। हमें इस प्रकार के संस्कारों को अन्य जनमानस तक फैलाना होगा ताकि नशे को दूर कर सकें।
–डा. राकेश कुमार, जिला प्रमुख महेंद्रगढ़

नशे से हर जनमानस रहें दूर

नशा, दहेज, निरक्षता बढ़ती जनसंख्या भारी। इन चारों से बचकर रहियो बहुत बुरी बीमारी। वाक्या हरिभूमि के संदेश का बखान करता है। हर जनमानस इससे दूर रहें। राष्ट्रीय हिंदी दैनिक हरिभूमि द्वारा विश्व तम्बाकू निषेध दिवस के सफल आयोजन पर बधाई। –कैलाशचंद शर्मा, पूर्व राजस्व राज्य मंत्री हरियाणा

लोगों पर भी पड़ता है असर

तम्बाकू सेवन से बहुत सी गंभीर बीमारियां तैयार हो जाती है। इसके सेवन से व्यक्ति ही नहीं बल्कि आस पास रहने वाले व्यक्तियों पर भी बुरा असर होता है। आज के दिन को तंबाकू निषेध दिवस के रूप में मनाते हुए हम सभी को तंबाकू के सेवन करने वालों को इन्हें छोड़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए। हरिभूमि का यह सराहनीय कार्य है। –डा. अशोक कुमार सीएमओ स्वास्थ्य विभाग नारनौल

सम्पूर्ण समाज को एकजुट होना होगा

आज वर्तमान में समाज में जिस प्रकार से नशा फैल रहा है है वो सिर्फ सोचने व विचार करने की बात नहीं है। बल्कि उस पर सम्पूर्ण समाज को एकजुट होकर नशे के खिलाफ लड़ना चाहिए। –एसआई राकेश महिला थाना नारनौल

हरिभूमि की इस सोच में जुड़ें युवा

हरिभूमि की यह अच्छी सोच है। भविष्य में भी इसी तरह नशे के खिलाफ मुहिम चलती रहे, यह आशा करता हूं। इस सोच को युवाओं से जोड़ा जाए। नशा एक अभिशाप है। इसे गांव स्तर पर भी चलाने की जरूरत है। –एसआई पंकज, इंचार्ज महावीर पुलिस चौकी नारनौल

खबर संक्षेप

दा वेदांता स्कूल में मनाया विश्व तंबाकू निषेध दिवस

नारनौल। दा वेदांता इंटरनेशनल स्कूल गुलावाला विश्व तंबाकू निषेध दिवस मनाया गया। इस

अवसर पर चेयरमैन विनोद कुमार यादव ने कहा कि इस दिन का उद्देश्य तंबाकू सेवन के व्यापक प्रसार व नकारात्मक स्वास्थ्य प्रभावों की और ध्यान आकर्षित करना है। इस अवसर पर विद्यार्थियों को धूम्रपान से शरीर में होने वाली बीमारियों के बारे में जानकारी दी गई और भविष्य में इससे दूर रहने के सुझाव दिए गए।

सेवानिवृत्ति पर विदाई समारोह आयोजित

नारनौल। समाज कल्याण विभाग में सहायक के पद पर कार्यरत हनुमान सिंह शनिवार को लगभग 35 वर्ष की सेवा के बाद सेवानिवृत्त हो गए। समाज कल्याण विभाग कार्यालय में आयोजित विदाई समारोह कार्यक्रम में जिला समाज कल्याण अधिकारी अमित शर्मा ने उनका पगड़ी पहनाकर सम्मान किया। जिला समाज कल्याण अधिकारी अमित शर्मा ने कहा कि जिस दिन व्यक्ति सरकारी सेवा में आता है, उसी दिन उसकी सेवानिवृत्ति भी तय हो जाती है। सहायक हनुमान सिंह ने अपने सरकारी सेवा के दौरान ईमानदारी, कर्तव्य पालन और सच्ची लगन से सरकारी सेवा की है। सहायक हनुमान सिंह हमेशा अपने कार्य के प्रति वफादार रहे।

छबील लगाकर राहगीरों को पिलाया ठंडा पानी

महेंद्रगढ़। सर्व हरियाणा ग्रामीण बैंक के क्षेत्रीय कार्यालय की ओर से सामाजिक कार्य के तहत छबील लगाने का कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम कॉलेज रोड पर 10 से दो बजे तक चला। इस कार्यक्रम का उद्घाटन रीजनल मैनेजर पुष्पा यादव ने किया। बैंक क्षेत्रीय कार्यालय के सभी स्टाफ सदस्यों ने कार्यक्रम को सफल बनाया। कार्यक्रम के दौरान बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया और लोगों को मीठा पानी पिलाया गया। मीठा पानी पिलाने के साथ-साथ लोगों को राहत प्रदान की गई। इस कार्यक्रम के माध्यम से बैंक ने समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह किया और लोगों को गर्मी से राहत प्रदान की।

जिला के पहले एसपीओ मदनलाल सेवानिवृत्त

नारनौल। जिला महेंद्रगढ़ के पहले एसपीओ मदनलाल सेवानिवृत्त हो गए। कैंप कार्यालय में आयोजित सेवानिवृत्ति कार्यक्रम में उपायुक्त डॉ. विवेक भारती ने उन्हें पगड़ी पहनाकर सम्मानित किया। मदनलाल का जन्म महेंद्रगढ़ के गांव सुरजनवास में 21 मई 1967 को हुआ था। उनकी पहली सर्विस नेवी में वर्ष 1985 से 2000 तक रही और दूसरी सर्विस मर्चेंट नेवी में वर्ष 2000 से 2016 तक रही। इसके बाद वर्ष 2016 से वे जिले में एसपीओ के पद पर रहे। ये जिले में पहले एसपीओ थे। इस कार्यक्रम में डीआरओ राकेश कुमार, निजी सहायक रणदीप व मन्नू देव के अलावा ओमप्रकाश, पंकज, सोनू, कुलदीप, हरीश गनमैन व ड्राइवर अशोक भी उपस्थित रहे।

रेल में सफर करने वाले यात्री को भी उठानी पड़ रही है परेशानी, प्रतिदिन पांच हजार यात्री करते है सफर

रेलवे रोड की हालात खस्ता होने के कारण लोगों को उठानी पड़ रही परेशानी

दो दशक पहले हुआ था सड़क का निर्माण, देखकर भी विभाग नहीं ले रहा सुध

- -रेलवे स्टेशन के सामने से वेयर हाउस तक सड़क की हालात खस्ता, दुकानदारों का व्यापार हो रहा है प्रभावित

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

महेंद्रगढ़। रेलवे स्टेशन के समीप टूटी सड़क। फोटो: हरिभूमि

शहर के रेलवे स्टेशन के सामने से वेयर हाउस तक की सड़क की हालात खस्ता होने के कारण लोगों को भारी परेशानी उठानी पड़ रही है। करीब 20 वर्ष पहले नगर पालिका की ओर से सड़क का निर्माण किया गया था। इसके बाद नपा की ओर से सड़क की मरम्मत तक नहीं कराई गई। बता दें कि इस मार्ग की हालात पूरी तरह से क्षतिग्रस्त है। इस पर जगह-जगह कई छोटे-बड़े गड्ढे हो गए हैं। इस मार्ग रेलवे स्टेशन व कई सरकारी कार्यालय होने के कारण लोगों का आवागमन बना रहता है, लेकिन सड़क की हालात खस्ता होने के कारण लोगों को भारी परेशानी उठानी पड़ रही है। इस सड़क से जब साधन गुजरते हैं तब बहुत अधिक धूल उड़ती है। धूल दुकानों में घुस जाती है।

इस मार्ग से कई स्कूलों की बसें भी गुजरती हैं। दुकानदार दुकान के सामने सड़क पर मलबा डलवा लेते हैं। इसके कारण सड़क उबड़ खाबड़ होने के कारण बारिश का पानी दुकानों के सामने खड़ा हो जाता है। इसके कारण लोगों को परेशानियों का सामना करना पड़ता है। नगर पालिका प्रशासन को सड़क को शीघ्र दुरुस्त कराना चाहिए। कई सरकारी व रेलवे स्टेशन होने के बाद भी नहीं ली जा रही सुध। इस मार्ग पर रेलवे स्टेशन भी पड़ता है। महेंद्रगढ़ रेलवे से प्रतिदिन करीब पांच हजार यात्री सफर करते है। सड़क की हालात खस्ता होने के कारण यात्रियों को भारी परेशानी उठानी पड़ रही है। इसके अलावा इस मार्ग पर मार्केट कमेटी कार्यालय, खाद्य आपूर्ति विभाग, अनाज मंडी, वेयरहाउस होने के कारण लोगों का यहां आवागमन बना रहता है। इसके महज कुछ दूरी पर एसडीएम कार्यालय व सीआईए थाना भी है। इसके बावजूद भी नगर पालिका की ओर से इस मार्ग की सुध नहीं ली जा रही है। वहीं रेवाड़ी जाने वाले वाहन चालक कई बार मार्ग का उपयोग करते है, लेकिन मार्ग ही हालात खस्ता होने के कारण उन्हें भारी परेशानी उठानी पड़ रही हैं।

हर समय हादसे का खतरा

समाजसेवी रामनिवास पाटोदा, दुकानदार नीरज, नरेंद्र कुमार, विजय कुमार अनेक लोगों ने बताया कि रेलवे स्टेशन से प्रतिदिन करीब पांच हजार यात्री सफर करते है। सुबह जब लोग दिल्ली सामान लेने के लिए जाते है, तब अंधेरा होने के कारण गड्ढे दिखाई नहीं देते। इस मार्ग पर गड्ढे होने के कारण हादसा होने का डर बना रहता है। इस मार्ग को दोबारा से बनाने का मुद्दा उठाया जा चुका है। इस मार्ग पर करीब दो दशक सड़क का निर्माण हुआ था। इसके बाद से ही नगर पालिका प्रशासन ने इसकी कोई सुध नहीं है। इसके कारण दुकानदार परेशान है। यहां से जब वाहन गुजरते हैं तो काफी धूल उड़ती रहती है। टूटी सड़क के कारण उनका व्यापार भी प्रभावित हो रहा है। कई सरकारी कार्यालय होने के कारण लोगों का दिनभर आवागमन बना रहता है। वहीं उड़ती धूल के कारण दुकानदारों को काफी परेशानी उठानी पड़ रही है। दुकानदार बीमारियों का शिकार हो रहे है, लेकिन नगर पालिका द्वारा इस मार्ग की सुध नहीं ली जा रही है। कई बार नगर पालिका के समक्ष सड़क बनाने का मुद्दा उठा चुके है।

भूतपूर्व निदेशक डॉ. जगबीर राठी होंगे विशेष अतिथि

आरपीएस कॉलेज बलाना में टैलेंट हंट व स्कॉलरशिप का टेस्ट आज

- आयोजन 12वीं पास साइंस, आर्टस व कॉमर्स विषय से संबंधित सभी विद्यार्थियों के लिए आयोजित किया जाएगा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

महेंद्रगढ़। आरपीएस कॉलेज का भवन। फोटो: हरिभूमि

आरपीएस कॉलेज बलाना में 12वीं पास छात्र-छात्राओं के लिए एक जून को टैलेंट हंट एवं स्कॉलरशिप टेस्ट का आयोजन किया जाएगा। कॉलेज रजिस्ट्रार डॉ. देवेंद्र यादव ने बताया कि इस टैलेंट हंट का आयोजन 12वीं पास साइंस, आर्टस व कॉमर्स विषय से संबंधित सभी विद्यार्थियों के लिए आयोजित किया जाएगा। परीक्षा का आयोजन कॉलेज में सुबह 10 बजे किया जाएगा। डॉ. यादव ने बताया कि टैलेंट हंट एवं स्कॉलरशिप परीक्षा के साइंस, आर्टस व कॉमर्स विषयों के प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर आने वाले छात्रों को लैपटॉप, टैब व फोन ईनाम स्वरूप दिए जाएंगे। इसी प्रकार चौथे स्थान से 50वें स्थान पर विषयवार 100 प्रतिशत तक छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी। कॉलेज सीईओ इंजी. मनीष राव ने बताया कि इस परीक्षा का उद्देश्य छात्रों की प्रतिभा को निखारने के अतिरिक्त जरूरतमंद विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान कर जीवन में सफल बनाने का है। शुक्रवार तक कुल 3700 विद्यार्थी इस परीक्षा के लिए रजिस्ट्रेशन करवा चुके है। रविवार को परीक्षा के दिन छात्रों के मनोरंजन के लिए विशेष अतिथि के रूप में भूतपूर्व निदेशक छात्र कल्याण विभाग महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक एवं प्रसिद्ध हरियाणवी कलाकार, कवि व लेखक डॉ. जगबीर राठी विशेषतौर पर उपस्थित होंगे। राव ने सभी 12वीं पास विद्यार्थियों को इस परीक्षा में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया तथा इसका लाभ उठाने का आह्वान किया तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दी।

विधानसभा चुनाव को चुनौती देने वाली याचिका पर हाईकोर्ट में हुई सुनवाई

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

हरियाणा की बहुचर्चित अटेली विधानसभा सीट से भाजपा विधायक एवं स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव के चुनाव को चुनौती देने वाली याचिका पर मंगलवार को पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट में सुनवाई हुई। जस्टिस लपिता बनर्जी की एकल पीठ में हो रही रही चुनाव याचिका की सुनवाई के दौरान प्रतिवादी आरती सिंह राव की तरफ से पैरवी कर रहे सीनियर एडवोकेट सतपाल जैन ने याचिका का जवाब देने के लिए कोर्ट से समय देने की प्रार्थना की। जिस पर कोर्ट ने आगामी 22 जुलाई तक याचिका पर जवाब दाखिल करने के लिए कहा। अब यह मामला 22 जुलाई को आगामी सुनवाई के लिए तय किया गया है। चुनाव याचिका को लेकर जिले के लोगों में भारी उत्सुकता बनी हुई है। याचिका बहुजन समाज पार्टी के प्रत्याशी अतरलाल ने दायर की है, जो आरती सिंह राव से 3066 वोटों से हार गए थे। चुनाव याचिका में दलील दी है कि पिछले साल अक्टूबर 2024 में हरियाणा विधानसभा के आम चुनाव के दौरान अटेली विधानसभा चुनाव में धांधली की गई। कई कानूनी प्रक्रियागत अनिवार्य प्रावधानों का पालन नहीं किया गया। आरती सिंह राव उनके अभिकर्ताओं व सहायकों ने भ्रष्ट आचरण करते हुए शराब व रुपये बांटे। आदर्श चुनाव आचार संहिता का उल्लंघन किया। रिटर्निंग ऑफिसर ने अनिवार्य नियमों का पालन नहीं किया।

आरपीएस में तंबाकू निषेध दिवस मनाया

महेंद्रगढ़। विश्व तंबाकू निषेध दिवस के अवसर पर आरपीएस स्कूल में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्कूल के सीईओ इंजीनियर मनीष राव ने कहा कि विश्व तंबाकू दिवस तंबाकू के हानिकारक प्रभावों के प्रति जागरूकता बढ़ाने का दिन है, जिसका उद्देश्य तंबाकू के हानिकारक प्रभावों के प्रति जागरूकता बढ़ाने और लोगों को तंबाकू सेवन से होने वाले खतरों से बचाना है। तंबाकू के सेवन से कैंसर, हृदय रोग और श्वसन समस्याएं जैसी गंभीर बीमारियां हो सकती हैं। तम्बाकू में मौजूद निकोटीन अत्यधिक नशे की लत है और तम्बाकू का उपयोग विभिन्न बीमारियों और कई अन्य दुर्बल करने वाली स्वास्थ्य स्थितियों के लिए एक प्रमुख जोखिम कारक है। आइए हम सब तंबाकू मुक्त जीवन जीने का संकल्प लें और दूसरों को भी प्रेरित करें। स्वस्थ जीवन के लिए तंबाकू से दूरी बनाना आवश्यक है।

बीआर स्कूल सेहलंग में ग्रीष्मकालीन पार्टी में बच्चों ने की मौज-मस्ती

महेंद्रगढ़। समर पार्टी के दौरान डांस करते विद्यार्थी।

महेंद्रगढ़। बीआर स्कूल सेहलंग में कक्षा छठी से आठवीं तक के विद्यार्थियों के लिए ग्रीष्मकालीन पार्टी का आयोजन किया गया। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को गर्मियों की छुट्टियों से पहले मनोरंजन व उत्साह का माहौल प्रदान करना था। पार्टी में विद्यार्थियों ने विभिन्न गतिविधियों और खेलों में भाग लिया। संगीत, नृत्य, इनडोर गेम्स, आर्ट एंड क्राफ्ट, एक्टिविटी, स्टोरी बुक्स रीडिंग और स्वादिष्ट जलपान ने कार्यक्रम में चार चांद लगाए। सभी विद्यार्थियों ने खूब आनंद लिया और एक-दूसरे के साथ यादगार पल बिताए। चेयरमैन हरीश भारद्वाज ने कहा कि यह पार्टी बच्चों के लिए छुट्टियों से पहले तनाव मुक्त होने और खुशी मनाने का एक मौका है। उन्होंने कहा कि बच्चे पढ़ाई के साथ-साथ ऐसे आयोजन में भी सक्रिय रूप से भाग लें, जो उनके सर्वांगीण विकास में सहायक हों। इस आयोजन से विद्यार्थियों को न केवल मनोरंजन प्रदान किया, बल्कि उन्हें एक-दूसरे के साथ जुड़ने और नए कौशल सीखने का अवसर भी दिया।

सिंघानिया विवि की ओर से स्टूडेंट फेलिसिटेशन प्रोग्राम

- डीसी सिंघानिया मेमोरियल मेडल के लिए आवेदन 10 जून तक

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

स्वर्गीय डीसी सिंघानिया।

पचेरी बड़ी स्थित सिंघानिया विश्वविद्यालय में 14 जून को 12वीं कक्षा के टॉपर्स के लिए एक विशेष सम्मान समारोह स्टूडेंट फेलिसिटेशन प्रोग्राम का आयोजन किया जाएगा। इस दौरान छात्रों को डीसी सिंघानिया मेमोरियल मेडल से सम्मानित किया जाएगा। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार विश्वविद्यालय संस्थापक स्व. डीसी सिंघानिया की स्मृति में वर्ष 2024 में प्रारंभ किया गया था। यह सम्मान झुंझुनूं और महेंद्रगढ़ जिले के उन छात्रों को प्रदान किया जाएगा, जिन्होंने वर्ष 2025 में कक्षा 12वीं की परीक्षा उत्तीर्ण की है। पुरस्कार के लिए ऑनलाइन पंजीकरण की अंतिम तिथि 10 जून निर्धारित की गई है। छात्र स्वयं अथवा उनके विद्यालय के प्रधानाचार्य विश्वविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध लिंक के माध्यम से पंजीकरण कर सकते हैं। इच्छुक अभ्यर्थी मोबाइल नंबर 8764569939 पर भी संपर्क कर सकते हैं। यह पुरस्कार समग्र सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन, शैक्षणिक उत्कृष्टता, सर्वश्रेष्ठ छात्रा, खेल व एथलेटिक श्रेष्ठता तथा एनडीएसआईएस स्कूल से समग्र सर्वश्रेष्ठ छात्र को दिए जाएंगे। इसके अलावा चयनित छात्रों को डीसी सिंघानिया मेमोरियल मेडल, प्रशस्ति पत्र व 11 हजार रुपये की नकदी भी दी जाएगी। यह पहल विद्यार्थियों की प्रतिभा को मंच देने के साथ-साथ उन्हें नई ऊंचाइयों तक पहुंचने के लिए प्रेरित करेगी। अधिक जानकारी के लिए, विश्वविद्यालय की जन संपर्क अधिकारी डॉ. मोनिका से संपर्क करें।

भाई के इलाज के नाम पर ठगी को अंजाम

रेवाड़ी। साइबर ठग लगातार लोगों को ठगी का शिकार बनाने में सफल हो रहे हैं। जागरूकता के तमाम प्रयास साइबर ठगों के सामने फेल साबित हो रहे हैं। साइबर ठगों ने एक व्यक्ति को उसके भाई के इलाज के नाम पर, तो दूसरे को क्रेडिट कार्ड की लिमिट बढ़ाने के नाम पर ठगी का शिकार बना दिया। साइबर थाना पुलिस ने केस दर्ज करने के बाद जांच शुरू कर दी। बावल में किराए के मकान में रह रहे मूल रूप से यूपी के शीतलपुर अंदावा निवासी जितेंद्र कुमार ने पुलिस शिकायत में बताया कि वह एक कंपनी में काम करता है। उसके पास 22 मई को अनजान नंबर से फोन आया कि उसके भाई का एक्सिडेंट हो गया है। उसे अस्पताल में दाखिल कराने के लिए पैसे भेजो। इसके बाद उसने अपने भाई बीरेंद्र कुमार को फोन लगाया, तो उसका फोन बंद आ रहा था। उसने फोन करने वाले से कहा कि वह उसके भाई का फोटो भेजे। फोन करने वाले ने बताया कि उसका भाई अस्पताल के अंदर है। उसे एडमिट कराने के लिए पैसे की जरूरत है।

विजय इंटर नेशनल स्कूल में मनाया धूम्रपान निषेध दिवस

विजय टूमना।

महेंद्रगढ़। चेयरमैन विजय इंटर नेशनल स्कूल में विश्व धूम्रपान निषेध दिवस मनाया गया। इस अवसर पर स्कूल चेयरमैन विजय टूमना ने कहा कि तंबाकू सेवन सेहत के लिए, हानिकारक होता है। इस खास दिन पर लोगों को तंबाकू का सेवन नहीं करने के लिए, जागरूक करना चाहिए। उन्होंने कहा कि हर साल विश्व में लगभग 80 लाख लोगों की मौत तंबाकू सेवन से होने वाली बीमारियों से हो जाती है। मरीज को भयंकर दर्द से गुजरना पड़ता है। इसलिए इससे बचें।

बलायचा में करवाया प्रोटोकॉल का अभ्यास

महेंद्रगढ़। योग की क्रियाएं करते ग्रामीण। फोटो: हरिभूमि

महेंद्रगढ़। हरियाणा योग आयोग व आयुष विभाग नारनौल के तत्वावधान में जिला आयुर्वेदिक अधिकार डॉ. शशिबाला व जिला योग कोऑर्डिनेटर डॉ. सतीश के निर्देशानुसार गांव बलायचा में 11वें अंतर राष्ट्रीय योग महोत्सव पर योगशाला प्रोटोकॉल का अभ्यास करवाया गया। डॉ. सुमन, सरपंच कंवर सिंह, बीडीसी मैंबर कैलाश शास्त्री, रामकिशन, नरेश आदि ने भगवान धनवंतरि के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया। डॉ. सुमन ने साधक को बताया कि इस बार प्रोटोकॉल एक पृथ्वी एक स्वास्थ्य के लिए योग की थीम पर आधारित है। उन्होंने बताया कि कैसे हम अपनी रसोई के सहारे, अपनी छोटी से छोटी और बड़ी-बड़ी बीमारी को ठीक कर सकते है। इस मौके पर सुशील देवी, सोमदत्त रिवासा, पवन बैरावास, योगशाला बलायचा के इंचार्ज मनोज कौशिक, मुकेश शर्मा आदि रहे।

विजय इंटरनेशनल स्कूल में योग प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

महेंद्रगढ़। योग की क्रिया करते विद्यार्थी। फोटो: हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

विजय इंटरनेशनल स्कूल में ग्रीष्मकालीन अवकाश से पहले एक योग प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम में विद्यालय के लगभग 900 बच्चों और 75 अध्यापकों ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय संरक्षक महेंद्र सिंह ने किया। संस्था चेयरमैन विजय यादव टूमना ने योग के महत्व और लाभों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि योग न केवल शारीरिक शक्ति प्रदान करता है, बल्कि मानसिक रूप से भी सुदृढ़ बनाता है। प्रिंसिपल नत्थू सिंह ने बताया कि यह दिवस हर वर्ष 21 जून को मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि योग की उत्पत्ति भारत से हुई है, लेकिन अब पूरा विश्व योग की महत्ता को समझता है और इसे अपने जीवन में अपनाया है। कार्यक्रम के अंत में चेयरमैन विजय यादव टूमना ने सभी उपस्थित लोगों का धन्यवाद किया और योग को नियमित रूप से करने का सुझाव दिया। इस अवसर पर सुनील ने बच्चों और अध्यापकों को योग की विभिन्न तकनीकों के बारे में जानकारी दी।

महेंद्रगढ़। मिलन समारोह में विचार विमर्श करते अभिभावक।

श्रीकृष्णा ग्रुप ऑफ महेंद्रगढ़ में अध्यापक-अभिभावक मिलन समारोह आयोजित

महेंद्रगढ़। श्रीकृष्णा ग्रुप ऑफ महेंद्रगढ़ व सिहमा में अध्यापक-अभिभावक मिलन समारोह आयोजन किया गया, जिसमें मुख्यातिथि चेयरमैन डॉ. बीरसिंह, विशिष्ट अतिथि सीईओ कर्मवीर राव व अध्यक्षता प्राचार्य रवि प्रकाश ने की। पीआरओ सुधीर यादव ने बताया कि स्कूल आगमन पर अभिभावकों को तिलक लगाकर उनका स्वागत किया। कक्षा प्रथम से 12वीं तक के विद्यार्थियों की मासिक यूनिट टेस्ट की रिपोर्ट अध्यापकों ने अभिभावकों से साझा की तथा पर अध्यापकों द्वारा उनके बच्चों के अच्छे गुणों को भी सराहा गया तथा विद्यार्थियों की कमियों को दूर करने के लिए अभिभावकों को उचित कदम उठाने की सलाह भी दी। इस मौके पर सीनियर हेड संदीप यादव, मिडल हेड सुरेंद्र कुमार, प्राइमरी हेड नत्थूराम, प्री-प्राईमरी हेड संतोष यादव, कॉर्डिनेटर सुशीला यादव, स्मृति शर्मा आदि मौजूद थे।

बीआर ज्ञानदीप विद्यालय में तंबाकू निषेध दिवस मनाया

महेंद्रगढ़। बीआर ज्ञानदीप विद्यालय सुरजनवास में विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर जागरूकता गतिविधियों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को तंबाकू व नशे की लत से होने वाले दुष्परिणामों से अवगत कराना। विद्यालय में पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें कक्षा नौवीं से 12वीं तक के छात्रों ने भाग लिया। प्रधानाचार्य रामवीर यादव ने कहा कि आज की युवा पीढ़ी अगर नशे से दूर रहती है, तो आने वाला कल न केवल उनका, बल्कि पूरे देश का उज्ज्वल होगा। चेयरमैन रूपराम यादव ने कहा कि ऐसे रचनात्मक प्रयास ही समाज में सकारात्मक बदलाव लाते हैं। उन्होंने बच्चों को निरंतर रचनात्मक और जागरूक नागरिक बनने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम के अंत में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों को पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए।

दैनिक हरिभूमि का विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर हस्ताक्षर अभियानः युवाओं को तंबाकू से दूरी बनाने की पहल

- हस्ताक्षर अभियान में पूर्व मंत्री एवं विधायक ओमप्रकाश यादव, पूर्व स्वास्थ्य मंत्री राव नरेंद्र सिंह सहित अन्य गणमान्यव आमजन की रही भागीदारी

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

दैनिक हिंदी समाचार पत्र हरिभूमि की ओर से शनिवार को बस स्टैंड पर विश्व तंबाकू निषेध दिवस मनाया गया। सुबह आठ बजे से दोपहर दो बजे तक चले इस अभियान में सैकड़ों युवाओं की भागीदारी रही। उन्हें शपथ दिलाई गई कि 'हम तंबाकू संबंधित उत्पादों की रोकथाम के लिए पूर्ण सहयोग करेंगे।' यह शपथ लेने के बाद लोगों ने हस्ताक्षर कर तंबाकू से दूरी बनाने का प्रण लिया। इस अभियान को सफल बनाने के लिए सहित अनेक अधिकारी व अलग-अलग पार्टियों से जुड़े नेतागण पहुंचे।

इस दौरान बस स्टैंड में आवागमन करने वाले यात्रियों को दैनिक हरिभूमि परिवार टीम के सदस्यों ने लोगों को तंबाकू से दूरी बनाने की अपील की। वहां आए लोगों से कहा कि विश्व स्वास्थ्य संगठन के सदस्य देशों की ओर से सन 1987 में विश्व तंबाकू निषेध दिवस स्थापना के उपलक्ष्य में संकल्प के तौर पर हस्ताक्षर अभियान चलाया गया। हस्ताक्षर अभियान में खास लोगों के साथ-साथ आमजन खासकर युवाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। हरियाणा रोडवेज के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भी इस आयोजन में हाथ बंटाया। हस्ताक्षर के तहत बच्चों, युवाओं से लेकर बुजुर्गों तक ने तंबाकू युक्त नशीले पदार्थों का त्याग करने के साथ-साथ अपने आसपास के लोगों को भी इससे दूर रहने की पहल करने का संकल्प लिया। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य भी तंबाकू से होने वाली मुंह के कैंसर एवं दर्दनाक बीमारियां से बचाव के तौर पर तंबाकू रहित समाज की स्थापना करना रहा, जिसमें लोगों ने स्वेच्छा से भागीदारी करते हुए तंबाकू का सेवन न करने एवं आसपास के लोगों को न करने देने के लिए प्रेरित की शपथ ली।

हरिभूमि परिवार से जिला प्रभारी सतीश सैनी, वरिष्ठ पत्रकार राजकुमार व पत्रकार नितेश कुमार, नारनौल विज्ञापन शाखा इंचार्ज सतपाल शर्मा और महेश यादव महेंद्रगढ़, दलीप दीक्षित कनीना व नीरज कुमार अटेली मौजूद रहे। सहयोगी के तौर पर प्रगतिशील शिक्षक संघ के अध्यक्ष संजय शर्मा, भीमसेन शर्मा, डा. जितेंद्र शर्मा, दिनेश शर्मा, उड़ान जनसेवा ट्रस्ट के अध्यक्ष बिरेंद्र यादव, युवा साथी हरियाणा से टिंकू प्रधान, पुलिस प्रवक्ता सुमित कुमार, रेडक्रॉस सोसायटी से कौशल कुमार का योगदान रहा।

नारनौल। हस्ताक्षर अभियान में हिस्सा लेने आए विधायक ओमप्रकाश यादव व पूर्व स्वास्थ्य मंत्री राव नरेंद्र सिंह का स्वागत करती हरिभूमि टीम। फोटो : हरिभूमि

पूर्व मंत्री बोले, हरिभूमि की पहल से जुड़े लोग

अभियान में सहयोग करने प्रदेश के पूर्व मंत्री एवं नारनौल विधायक ओमप्रकाश यादव और प्रदेश के पूर्व स्वास्थ्य मंत्री राव नरेंद्र सिंह भी पहुंचे। इस दौरान उन्होंने कहा कि नारनौल बस स्टैंड पर हरिभूमि अखबार की तरफ से विश्व तम्बाकू दिवस पर हस्ताक्षर अभियान का कार्यक्रम किया गया। लोगों को तम्बाकू छोड़ने वास्ते जागरूक किया गया। यह एक बहुत अच्छी पहल है। इसके लिए वह हरिभूमि परिवार का आभार प्रकट करते है और एक अच्छे कार्य के लिए लोगों को बताया गया। जागरूक किया गया। वास्तव में तम्बाकू बहुत ही हानिकारक है। इससे कैंसर व अन्य बहुत सी बीमारियां होती है। इसको छोड़ना स्वयं के लिए परिवार के लिए व समाज के लिए बहुत ही उचित कदम रहता है।

खबर संक्षेप

नारनौल। मीना यादव को सम्मानित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

सरस्वती स्कूल में विदाई पार्टी आयोजित

नारनौल। सरस्वती बाल मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की रसायन शास्त्र की प्रवक्ता डॉ. मीना यादव का चयन एकलव्य मॉडल सीनियर सेकेन्डरी स्कूल जबलपुर मध्यप्रदेश में हुआ। विद्यालय में विदाई पार्टी का आयोजन किया। इसमें विद्यालय के चैयरमैन मुकेश शर्मा, प्राचार्या क्षमा पाण्डेय ने मीना को बधाई देते हुए स्मृति चिह्न प्रदान किया और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इस विदाई पार्टी में विद्यालय के सभी अध्यापक गण उपस्थित रहे और सभी ने अपने विचार प्रस्तुत किए। अंत में सभी ने मीना को भावुक हृदय से विदाई पार्टी दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

दौगड़ा अहीर में महापंचायत आज

मंडी अटेली। अहीर रेजिमेंट के गठन की मांग को लेकर रविवार को दौगड़ा अहीर के रजवाड़ा फोर्ट में महापंचायत आयोजन किया जाएगा। यह महापंचायत सुबह नौ बजे से दोपहर 12 बजे तक होगी। जिसकी अगुवाई अहीर रेजिमेंट संघर्ष समिति दौगड़ा अहीर की ओर से की जाएगी।

श्री श्याम का द्वितीय विशाल जागरण सात को

महेंद्रगढ़। गांव कोथल खुर्द में गौराला कुआं पर श्री श्याम का द्वितीय विशाल जागरण का आयोजन किया जाएगा। जिसमें श्रीश्याम मंदिर जौरासी धाम नारनौल से कमलकांत महाराज मुख्य रूप से उपस्थित रहेंगे। श्रीश्याम मित्र मंडल सदस्य मंजीत यादव ने बताया कि सात जून को शात सात बजे गांव कोथल खुर्द में श्री श्याम का द्वितीय विशाल जागरण आयोजित किया जाएगा। उन्होंने बताया कि जागरण में सत्यम कानौड़िया, अतुल लामडिवाल, आनंद सोनी, मुकेश, बंसल, सचिन कुमार आदि कलाकार अपनी गायकी से धमाल मचाएंगे तथा सोनू म्युजिकल ग्रुप द्वारा म्युजिकल व मोहित महादेव आर्टस ग्रुप गोहाना द्वारा झांकिया प्रस्तुत की जाएगी।

पटवारियों को छुट्टी के दिन भी बुलाने की मांग, निवास प्रमाण पत्र भी अटके

सरल सर्वर ठपः हरियाणा के छात्र बेहाल, सीईटी व कॉलेज फॉर्म की अंतिम तिथि नजदीक

हरियाणा सरकार का महत्वाकांक्षी सरल पोर्टल, जिस पर विभिन्न महत्वपूर्ण ऑनलाइन सेवाएं उपलब्ध है, बीते एक सप्ताह से पूरी तरह ठप पड़ा है।

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

प्रदेश में इन दिनों उच्च शिक्षा प्राप्त करने और सरकारी नौकरियों की तैयारी कर रहे लाखों युवाओं का भविष्य अधर में लटका हुआ है। हरियाणा सरकार का महत्वाकांक्षी सरल पोर्टल, जिस पर विभिन्न महत्वपूर्ण ऑनलाइन सेवाएं उपलब्ध है, बीते एक सप्ताह से पूरी तरह ठप पड़ा है। ऐसे में कॉलेज में दाखिले के लिए आवेदन करने वाले और कॉमन एलिजिबिलिटी टेस्ट के फॉर्म भरने वाले छात्र दर-दर भटकने को मजबूर है जबकि आवेदन की अंतिम तिथियां तेजी से नजदीक आ रही है।

कॉलेजों में दाखिले के लिए आवेदन की अंतिम तिथि नौ जून निर्धारित की गई है वहीं सीईटी के फॉर्म भरने की अंतिम तिथि 12 जून तय की गई है। हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग के चेयरमैन ने भी अभ्यर्थियों से 12 जून तक अपने फॉर्म भरने सुनिश्चित करने का आग्रह किया है। यह विडंबना ही है कि जब छात्रों को अपने भविष्य को सुरक्षित करने के लिए ऑनलाइन दस्तावेज तैयार करने की सख्त आवश्यकता है तब सरल पोर्टल का सर्वर पूरी तरह से ठप पड़ा है। हरियाणा निवास प्रमाण पत्र, जाति प्रमाण पत्र और आय प्रमाण पत्र जैसे कई महत्वपूर्ण दस्तावेज सरल पोर्टल के माध्यम से ही बनाए जाते है जिनके बिना न तो कॉलेज में दाखिला संभव है और न ही सीईटी का फॉर्म भरा जा सकता है। जुलाई माह में सीईटी की परीक्षा होने की आशंका जताई जा रही है। ऐसे में छात्र अपनी पढ़ाई छोड़कर इन दस्तावेजों को बनवाने के लिए विभिन्न सरकारी कार्यालयों और साइबर कैफे के चक्कर काट रहे है लेकिन सर्वर न चलने की वजह से उनके सारे प्रयास व्यर्थ साबित हो रहे है। छात्रों का कहना है कि यह स्थिति उनके मानसिक तनाव को बढ़ा रही है और उनके बहुमूल्य समय को बर्बाद कर रही है।

नारनौल। साइबर कैफे पर सरल सर्वर ऑन होने का इंतजार करते हुए। फोटो : हरिभूमि

26 मई के बाद नहीं हो रही फाइलें अप्रूवल

सीएससी संचालक हरिओम यादव ने हरिभूमि को बताया है कि 26 मई से जाति प्रमाण पत्र सहित किसी भी प्रकार की फाइलें अप्रूव नहीं हो रही है जिसके कारण आवेदकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। पहले जाति प्रमाण पत्र मात्र दो घंटे में बन जाता था। उनके पास ही पोर्टल पर 100 से अधिक फाइलें लंबित है जबकि अभ्यर्थियों को फाइल अप्रूवल का एसएमएस मिल चुका है। इस स्थिति को देखते हुए अनुमान है कि जिले में 15 हजार से अधिक फाइलें लंबित है। यदि सर्वर की तकनीकी समस्या के कारण ये सभी फाइलें रद्द होती है तो बेरोजगार अभ्यर्थियों को पांच लाख रुपये से अधिक का आर्थिक नुकसान होगा।

पटवारियों को छुट्टी के दिन भी कार्यालयों में बैठाने की मांग

दाखिला लेने वाले विद्यार्थी और सीईटी के अभ्यर्थी लगातार पटवार घरों के चक्कर लगा रहे है। भीषण गर्मी के इस मौसम में भीड़ देखकर निराश होकर उन्हें अपने घर वापस लौटना पड़ रहा है। युवाओं का कहना है कि एडमिशन और सीईटी फॉर्म की आवेदन प्रक्रिया एक साथ होने की वजह से पटवार घर और ऑनलाइन साइबर कैफे की दुकानों पर भारी भीड़ उमड़ रही है। इस समस्या से निजात पाने के लिए युवाओं ने मांग की है कि पटवार घरों को छुट्टी के दिनों में भी खुला रखा जाए। उनका तर्क है कि इससे भीड़ कम होगी और छात्रों को दस्तावेज बनवाने में कोई दिक्कत नहीं आएगी। इसके साथ ही सरल सर्वर को जल्द से जल्द ठीक करने की भी पुरजोर मांग की गई है।

हरियाणा निवास प्रमाण पत्र की फाइल उसी दिन पास करने की मांग

युवाओं ने उपायुक्त से भी गुहार लगाई है कि हरियाणा निवास प्रमाण पत्र के ऑनलाइन प्रार्थना पत्र तहसीलदार कार्यालय में जाते है। पिछले एक सप्ताह से इन प्रार्थना पत्रों को पास नहीं किया जा रहा है, जिससे अभ्यर्थियों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। युवाओं का कहना है कि इन फाइलों को उसी दिन पास किया जाए। उन्होंने सुझाव दिया कि यदि कर्मचारियों की स्पेशल ड्यूटी लगाई जाए तो यह छात्रों के लिए बहुत मददगार होगा। इस पूरे मामले पर सरकार और संबंधित विभागों की चुप्पी छात्रों में रोष पैदा कर रही है। लाखों छात्रों का भविष्य दांव पर लगा है और ऐसे में तकनीकी खामियों को जल्द से जल्द दूर कर सुचारू सेवाएं उपलब्ध कराना सरकार की प्राथमिकता होनी चाहिए।

सीईटी के परीक्षा केंद्र गृह जिलों में ही बनाए जाएंः राव सुखबिंद्र सिंह

नारनौल। हरियाणा शिक्षक पात्रता परीक्षा व हरियाणा संयुक्त पात्रता परीक्षा दोनों ही पात्रता परीक्षाएं हैं। जब शिक्षक पात्रता परीक्षा के परीक्षा केंद्र गृह जिले में बनाए जा सकते हैं, तो संयुक्त पात्रता परीक्षा के परीक्षा केंद्र भी गृह जिले में ही बनाए जाने चाहिए। उक्त मांग पूर्व अधीक्षण अभियंता एवं वरिष्ठ कांग्रेस नेता राव सुखबिंद्र सिंह ने करते हुए कहा है कि इससे अभ्यर्थियों को अनावश्यक तनाव और यात्रा से मुक्ति मिलेगी। वहीं राज्य सरकार को भी अपनी बसों को व्यर्थ इधर उधर नहीं दौड़ाना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि जितना फोकस बाकी व्यवस्थाओं पर किया जाना है, उतना यदि परीक्षा के प्रबंधन पर कर लिया जाए, तो गृह जिले में भी परीक्षा सुचारू और नकल रहित करवाई जा सकती है। राव का कहना है कि तकनीक के इस दौर में भी यदि नकल रोकने के लिए उम्मीदवारों को अढ़ाई सौ तीन सौ किलोमीटर दूर परीक्षा केंद्र दिए जाते हैं, तो यह प्रशासनिक विफलता ही कहलाएगी। उन्होंने कहा कि पहले शिक्षक पात्रता परीक्षा के परीक्षा केंद्र भी दूर दिए जाते थे, लेकिन अब गृह जिलों में ही शांतिपूर्वक परीक्षा संपन्न होती है। उन्होंने कहा कि सीईटी भी पात्रता परीक्षा ही है, इसके केंद्र भी गृह जिलों में बनाए जा सकते हैं, केवल सरकार में इच्छाशक्ति होनी चाहिए। उन्होंने मांग की है कि व्यापक लोकहित में सरकार को इस पर गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिए और शिक्षक पात्रता परीक्षा केंद्र वाली नीति ही सीईटी में लागू करनी चाहिए। इससे उम्मीदवारों को तो लाभ होगा ही सरकार का राजस्व भी बचेगा साथ ही रोडवेज को भी नुकसान नहीं होगा।

कैंटर ने बाइक को मारी टक्कर, उपचार के दौरान मौत

- शनिवार की देर शाम गांव नांगल सिरोही बाईपास पर हुआ हादसा, महेंद्रगढ़ से घर जा रहा था व्यक्ति

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

नारनौल-दादरी स्टेट हाईवे 148-बी पर शनिवार की शाम को गांव नांगल सिरोही बाईपास पर एक कैंटर ने बाइक सवार को टक्कर मार दी। उपचार के दौरान हाथ से में घायल व्यक्ति की मौत हो गई।

मिली जानकारी के अनुसार गांव डरोली अहीर निवासी 48 वर्षीय राज्यपाल शनिवार की देर शाम को महेंद्रगढ़ से अपने घर जा रहा था। जब वह नांगल सिरोही बाईपास पर पहुंचा तो सामने से आ रहे कैंटर ने उसकी बाइक को टक्कर मार दी।

आसपास के लोगों ने घटना की सूचना पुलिस को दी। हादसे में घायल व्यक्ति को उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया। उपचार के दौरान घायल की मौत हो गई। पुलिस ने शिव को कब्जे में लेकर कार्रवाई शुरू कर दी है।

महेंद्रगढ़। दुर्घटना में शामिल कैंटर व हादसे में क्षतिग्रस्त बाइक। फोटो : हरिभूमि

अज्ञात वाहन की चपेट में आने से युवक की जान गई

मंडी अटेली। नारनौल रेवाड़ी रोड पर अटेली में ट्रैक्टर एजेंसी के समीप सड़क किनारे खड़े युवक को अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जोरदार थी कि युवक की मौके पर ही मौत हो गई। जानकारी के अनुसार मनेठी निवासी जगदीश ने पुलिस में दी शिकायत में बताया कि गत रात्रि को वह तथा उसका भतीजा राकेश बाछौद से अटेली आ रहे थे। जब वह ट्रैक्टर एजेन्सी के पास पहुंचे तो वह शौच करने के लिए मोटरसाइकिल को सड़क से नीचे उतार कर खड़ा कर दिया। राकेश मोटरसाइकिल के पास खड़ा था, तभी एक अज्ञात वाहन तेज गति से आया और उसके भतीजे को टक्कर मार दी। अंधेरा ज्यादा होने के कारण वाहन को पहचान नहीं सका। इस टक्कर से उसके भतीजे की मौत हो गई। पुलिस ने अज्ञात वाहन चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी।

नारनौल। कार्यक्रम में भाग लेते अभिभावक व बच्चे। फोटो : हरिभूमि

यदुवंशी में दादा दादी व नाना नानी आशीर्वाद उत्सव संपन्न

नारनौल। यदुवंशी परिसर में दादा दादी व नाना नानी आशीर्वाद उत्सव का आयोजन किया गया। इस विशेष अवसर का आयोजन विद्यालय चेयरमैन राव बहादुर सिंह के निर्देशानुसार किया गया। जिनकी गरिमामयी उपस्थिति कार्यक्रम में चार चांद लगा गई। कार्यक्रम की शुरूआत पारंपरिक दीप प्रज्ज्वलन और मंगलाचरण से हुई। इसके पश्चात विद्यार्थियों ने रंग बिरंगी सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देकर समस्त आगंतुकों का मन मोह लिया। बच्चों की ओर से प्रस्तुत नृत्य, गीत और नाट्य रूपांतरण ने दर्शकों को भावविभोर कर दिया। विशेष रूप से बुजुर्गों के सम्मान में प्रस्तुत कार्यक्रमों ने सभी के हृदय को छू लिया। कार्यक्रम की सफलता में प्रमुख भूमिका निभाने वालों में विद्यालय की निदेशिका सुरेश यादव, प्राचार्य डॉ. अनंत शर्मा, और उपप्रधानाचार्य नरेश यादव प्रमुख रूप से शामिल रहे। चेयरमैन राव बहादुर सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि संस्कारों की नींव हमारे बड़े हैं, जिनसे हर पीढ़ी रोशन होती है।

अब प्रतिदिन दिया जाएगा योग प्रशिक्षण

- 14 को होगा योग मैराथन का आयोजन

नारनौल। आगामी 21 जून को जिला व खंड स्तर पर 11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया जाएगा। इसके लिए अब प्रतिदिन योग प्रशिक्षण दिया जाएगा। उपायुक्त डॉ. विवेक भारती ने बताया कि एक जून को पुलिस लाइन में, दो को होमगार्ड, तीन को रेडक्रॉस कार्यालय में व चार नगर पालिका वार्डों में योग प्रशिक्षण दिया जाएगा। इसी प्रकार नौ जून को पब्लिक हेल्थ, 10 को आयुष विभाग, 11 को स्वास्थ्य विभाग, 12 को पॉलीटेक्निक, 13 जून को खेल विभाग नर्सरी व लघु सचिवालय में योग प्रशिक्षण दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि 14 जून को योग मैराथन का आयोजन किया जाएगा। 16 जून को मेडिकल कॉलेज में योग कॉन्फ्रेंस व वर्कशाप का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि 17 जून को महिला एवं बाल विकास व 18 जून को खनन विभाग के अधिकारियों को योग प्रशिक्षण दिया जाएगा। 19 जून को गांवों व वार्डों में योग जागरण यात्रा तथा 20 जून को कार्यक्रम की फाइनल रिहर्सल होगी। डीसी ने बताया कि आयुष विभाग के समन्वय में पांच जून को ब्रह्म कुमारी, छह जून को भारतीय योग संस्थानों, सात जून को तहसील स्तर पर पतंजलि व आठ जून को आर्ट ऑफ लिविंग को जिला स्तर पर प्रशिक्षण दिया जाएगा।

नारनौल। पीजी कॉलेज में आपदा प्रबंधन के बारे में जागरूक करते हुए।

पीजी कॉलेज में एनडीआरएफ की ओर से आपदा प्रबंधन कार्यशाला आयोजित

नारनौल। राजकीय महाविद्यालय के यूथ रेडक्रॉस, एनएसएस, एनसीसी प्रकोष्ठ के सानिध्य में आपदा प्रबंधन कार्यशाला का आयोजन किया गया। यूथ रेडक्रॉस प्रकोष्ठ के नोडल अधिकारी प्रोफेसर डॉ. चंद्रमोहन ने बताया कि सातवीं वाहिनी राष्ट्रीय आपदा मोचन बल एनडीआरएफ भटिंडा की टीम असिस्टेंट कमांडेंट सरोज रानी की कमान में प्रशिक्षक मोहन कुमार के प्रशिक्षण व टीम सदस्यों ने महाविद्यालय के मल्टीपरपज हाल में विद्यार्थियों व शिक्षकों को मानव सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम के तहत आपदा प्रबंधन के पहलुओं पर प्रशिक्षण दिया। एनडीआरएफ टीम ने प्रशिक्षण के दौरान शिक्षकों व विद्यार्थियों को बाढ़ व भूकम्प सुरक्षा, सड़क सुरक्षा, वज्रपात सुरक्षा व सर्पदंश प्रबंधन, करंट लगने पर, सिलेंडर में गैस रिसाव और आग लगने पर, आगजनी की घटनाओं के बारे में जानकारियां दी। डिविजनल कमांडर टेकचंद यादव व ब्रिगेड ऑफिसर विजय कुमार ने बताया कि एनडीआरएफ भटिंडा की टीम सभी प्रकार की आपदाओं से बचाव व जागरूकता सम्बंधित कार्यशाला के दौरान जिले की तहसीलों में आमजन को जागरूक कर रही है। महाविद्यालय कुलसचिव डॉ. सत्यपाल सुलोदिया ने बताया कि आपदा जोखिम न्यूनीकरण हेतु सातवीं वाहिनी एनडीआरएफ द्वारा जिले के सरकारी व प्राइवेट स्कूलों के शिक्षकों तथा छात्रों को लगातार इस तरह का प्रशिक्षण दिया जा रहा हैं। इस मौके पर डॉ. महेंद्र मुदगिल, डॉ. सतीश सैनी, डॉ. मीना कुमारी, डॉ. भारत भूषण, डॉ. विजय गौड़, डॉ. पलक, डॉ. सोमवीर, डॉ. विजेंद्र, डॉ. ध्वनित सैनी, महाविद्यालय उपप्राचार्य डॉ. जगजीत सिंह मोर मौजूद थे।

विकसित कृषि संकल्प अभियान तीसरे दिन भी रहा जारी

किसानों को दी सरकारी योजना की जानकारी

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

कृषि विज्ञान केंद्र की ओर से तीन टीम का गठन कर विकसित कृषि संकल्प अभियान तीसरे दिन भी जारी रहा। टीम गांव निंबी, छाजियावास, दुलोठ अहीर, निम्बहेड़ा, ढाढोत, सोहला, पालड़ी पनिहारा, पाली व धोली गांव का दौरा किया। वरिष्ठ संयोजक डॉ. जयलाल यादव ने बताया कि कार्यक्रम के दौरान कृषि एवं किसान कल्याण, पशुपालन एवं डेयरी, मत्स्य, बागवानी, इफको, हरियाणा पशु विज्ञान केंद्र आदि विभाग से कर्मचारियों ने किसानों के कल्याण के लिए भारत सरकार और हरियाणा सरकार की योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया। इस दौरान किसानों को खरीफ फसल विशेषकर बाजरा, कपास, मूंग, ग्वार व तिल की उन्नत कृषि क्रिया के बारे जानकारी दी। टीम एक में शामिल जिला विस्तार विशेषज्ञ (पौध रोग) डॉ. नरेंद्र यादव व जिला विस्तार विशेषज्ञ (गृह विज्ञान) डॉ. पूनम यादव ने किसानों को खरीफ फसल के एमएसपी के बारे में बताया व प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना आदि योजनाओं को अपनाने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने किसानों बिजाई से पहले बीज उपचार व खरीफ फसल में रस चूसने वाले कीड़े के बारे में जानकारी दी। उन्होंने किसानों को परंपरागत खेती से हटकर वैज्ञानिक तरीकों से खेती करने की सलाह दी। इस दौरान संबंधित गांव के सरपंच मुख्यातिथि रहे। इस मौके पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग से उपमंडल कृषि अधिकारी डॉ. अजय यादव, गजानंद, संजय यादव, बहराम यादव, पशु पालन व डेयरी विभाग से डॉ. अनिल जिलोवा, डॉ. विनोद, डॉ. सुजाता, डॉ. इंदू, बागवानी विभाग से राधेश्याम, राजकुमार, हरिकिशन, मत्स्य विभाग से सोमदत्त, मंजीत व सतीश कुमार, इफको से महेश मौजूद रहे।

महेंद्रगढ़। किसानों को जानकारी देते विशेषज्ञ। फोटो : हरिभूमि

आज इन गांवों का रहेगा दौरा

कृषि अधिकारियों का दौर रविवार को भी जारी रहेंगा। टीम गांव डुलाना, खेड़ा, सुरजनवास, मेघनवास, बुचौली, चितलांग, बसई, आकोदा, खुडाना राजपूत का दौरा रहेंगा।

विशेष: विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून

प्रदूषण की भयावह होती वैश्विक समस्या और बढ़ते तापमान से मुक्ति पाने का सबसे कारगर उपाय है कि हम ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर को अपनाने की दिशा में कारगर कदम बढ़ाएं। हालांकि इस दिशा में भी कई चुनौतियां हैं, लेकिन सरकारी स्तर पर ठोस पहल और जन सामान्य की भागीदारी से देश-दुनिया को हरा-भरा बना सकते हैं, भविष्य को सुरक्षित बना सकते हैं।

तपते शहरों में ऐसे बढ़ेगा ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर

कवर स्टोरी / अपराजिता

आगामी 5 जून 2025 को जब हम विश्व पर्यावरण दिवस मनाएंगे, तो हमारे देश के कई बड़े शहर तप रहे होंगे। दिल्ली हो या जयपुर, नागपुर हो या हैदराबाद। देश के कई शहर गर्मियों में तपते द्वीपों में बदल चुके हैं। सिर्फ हम अपने देश के शहरों की ही बात क्यों करें? लाहौर, बीजिंग, न्यूयॉर्क, टोक्यो और दुबई की भी आज की तारीख में यही स्थिति है। सवाल है, इन शहरों में फिर से जीवन को चैन और आराम देने वाली ठंडक कैसे मिले? कंक्रीट के हमारे जंगल, ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर में कैसे बदलें?

क्या है ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर: ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर का मतलब है, ऐसे डिजाइन और ऐसी व्यवस्थाएं, जो प्राकृतिक समाधान प्रस्तुत करें। ये पार्क, छतों पर बागवानी, हरित दीवारों, वर्षा जल संरक्षण, शहरी जंगल, जैविक नालियां, ग्रीन कॉरीडोर और स्वच्छ ऊर्जा से जुड़ी सम्मिलित संरचनाओं का नाम है। यह ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर न केवल हमारे पर्यावरण की रक्षा करता है बल्कि लोगों को रोजगार, बेहतर स्वास्थ्य और शहरों को अधिक टिकाऊ बनाता है।

बिगड़ते पर्यावरण की वजहें: आजकल जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वॉर्मिंग के कारण भारत ही नहीं दुनिया भर के ज्यादातर शहर, गर्मी से जल रहे हैं। शहरों में अर्बन हीट, आइलैंड इफेक्ट जोर-शोर से देखा जा रहा है। शहरों में कंक्रीट, डामर और प्लास्टिक की अधिकता, जमीन की नमी सोख रही है, जिससे तापमान बढ़ रहा है। यही नहीं जो शहर पहले छायादार पेड़ों की कतारों के हिस्से हुआ करते थे, अब उन शहरों में बड़े-बड़े पेड़ों को काट कर सड़कों का विस्तार और नए-नए मॉल्स बनाए जा रहे हैं, जिससे हमारे पारंपरिक शहरों का ग्रीन आवरण लगातार घट रहा है। कार्बन उत्सर्जन बढ़ रहा है और जल प्रबंधन की विफलता भी हमारे सामने है। शहरों में अंधाधुंध ढंग से बढ़ रहे वाहन, फैक्ट्रियां और कूलिंग सिस्टम से निकलने वाली गैसें, लगातार हमारे शहरों के तापमान बढ़ा रही हैं। दूसरी तरफ अंधाधुंध रिहाईशी ढांचे खड़े कर देने के कारण बारिश का जल बह कर निकल जाता है। धरती में वापस नहीं जा पाता, जिससे न सिर्फ सूखे बल्कि बाढ़ की समस्या भी इससे बढ़ रही है।

बढ़ रही है ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर की जरूरत: बिगड़ते पर्यावरण की वजह से ही विश्व स्तर पर ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर की खासी जरूरत बढ़ी है। आज ज्यादातर नगर योजनाकार बार-बार ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर की जरूरत पर बल देते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन का मानना है कि 2050 तक दुनिया की करीब 70 फीसदी आबादी शहरों में रह रही होगी और तब आज से कहीं ज्यादा पर्यावरणीय दबाव होगा। साल 2023 की आईपीसीसी रिपोर्ट कहती है, यदि शहरों में हरित क्षेत्र 30 प्रतिशत बढ़ा दिया जाए तो दुनिया के औसतन तापमान में 2 डिग्री सेंटीग्रेड की कमी आ जाएगी। पेरिस, सियोल, मेलबर्न और कोपनहेगन जैसे शहर अब हर नई परियोजना को ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर में तब्दील कर रहे हैं।

इस दिशा की चुनौतियां: भारत में ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर बनाना बड़ी चुनौती है, क्योंकि हमारी स्थानीय शहरी निकायों के पास इस पर स्पष्ट दिशा-निर्देश नहीं हैं। साथ ही हमारे नगर निकायों के पास पर्याप्त वित्तीय संसाधनों की भी कमी है। इसलिए हमारे शहर चाहकर भी ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर को फिलहाल नहीं बढ़ा पा रहे हैं, क्योंकि आम लोग इसे अतिरिक्त खर्च वाला समझते हैं। यही कारण है कि अब बड़े पैमाने पर ऐसी योजनाएं और स्मार्ट सिटी मिशन उभर कर सामने आ रहे हैं, जिनमें ग्रीन कॉरीडोर, अर्बन फॉरेस्ट, रेन वॉटर हार्वेस्टिंग पर जोर दिया जा रहा है। शहरों में कृषि और टेरेस गार्डेनिंग का बढ़ावा भी इसी के चलते हो रहा है। तमाम नए स्टार्टअप यह कर रहे हैं। सीएसआर और ईएसजी की फंडिंग से निजी कंपनियां आजकल हरित परियोजनाओं में निवेश कर रही हैं।

ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर बढ़ाने के तरीके: ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर बढ़ाने के लिए जरूरी है कि सभी शहरी विकास योजनाओं में ग्रीन बजट को अनिवार्य किया जाए। साथ ही बिल्डिंग बाई लॉज में छत पर गार्डेनिंग, वर्षा जल संग्रहण जैसी अनिवार्य योजनाओं को लागू किया जाए। अब जरूरी हो गया है कि शहरी खेती और कम्युनिटी गार्डेनिंग को अनिवार्य किया जाए। हर मुहल्ले में सामूहिक बागवानी प्रोजेक्ट शुरू किए जाएं, नगर निगम स्थानीय सब्जी उत्पादन को बढ़ावा दें, इसके लिए सब्सिडी और बेहतर ट्रेनिंग का सहारा लिया जाए। शहरी घरों की छतों और दीवारों को ज्यादा से ज्यादा हरा किया जाए। इसकी सबसे पहली शुरुआत सरकारी भवनों, विभिन्न सरकारी इमारतों और शहरी विभागों से किया जाए। निजी फ्लैट और कॉम्प्लेक्स में भी ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर को बढ़ावा देने के लिए कई तरह के टैक्स में छूट दी जाए ताकि लोग ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर की तरफ आकर्षित हों। शहर की हर इमारत में ग्रीन वाटर ट्रीटमेंट प्लांट लगाना अनिवार्य किया जाए, साथ ही बरसाती नालियों को पुनः डिजाइन करके उन्हें जैविक जल निकासी प्रणाली में बदला जाए।

ये उपाय भी होंगे कारगर: बड़े पैमाने पर शहरों का ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर तभी विकसित हो सकता है, जब ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर से जुड़ी इसकी ट्रेनिंग, जैसे लैंडस्केपिंग, वर्टिकल गार्डेनिंग जैसी तकनीकों में युवाओं की ज्यादा से ज्यादा भागीदारी हो। युवाओं को ग्रीन अंबेस्डर बनाकर स्कूल, कॉलेज से ही इस दिशा में उन्हें पर्यावरण हितैषी के रूप में बड़ा किया जाए। शहरों में यदि ग्रीन कैप बढ़ेगा, तो लोग उनके फायदों से भी वाकिफ होंगे और ज्यादा से ज्यादा इसका फायदा उठाना चाहेंगे। इसके लिए जरूरी है कि ग्रीन मैप एप्स के कल्चर को बढ़ावा दिया जाए। ग्रीन कवर एरिया को स्टेटस सिंबल बनाया जाए। इसके लिए एआई और सैटेलाइट तकनीक से इनकी रक्षा और निगरानी भी किया जाना जरूरी है।

ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर को अपनाने से न केवल हमारी धरती को फिर से हरी-भरी बनाने में मदद मिलेगी बल्कि नई पीढ़ी को उस दहकती हुई गर्मी से छुटकारा मिलेगा, जो आज शहरी जीवन का बड़ा अभिशाप बन चुका है। इसलिए विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर इस पर गंभीरता से सिर्फ सोचा ही न जाए, सिर्फ बहस ही न हो बल्कि इसमें अमल किए जाने की प्रक्रिया तेजी से बढ़े। *

जो मानसून हर वर्ष जून के पहले सप्ताह में भारत में प्रवेश करता था, इस बार मई के अंतिम सप्ताह से पहले ही आ गया। ऐसा होने के पीछे किस तरह के कारण जिम्मेदार हैं और इसके क्या प्रभाव हो सकते हैं, आप जरूर जानना चाहेंगे।

समय से पहले आया मानसून !

बदलाव / रजनी अरोड़ा

मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक इस साल मानसून की रफ्तार इतनी तेज है कि करीब 2 सप्ताह पहले ही देश में एंट्री हो गई है। समय से पहले आए मानसून से हालांकि जन-मानस को गर्मी की तपिश से राहत पहुंची है, लेकिन पर्याप्त तैयारी के अभाव में कई शहर जल भराव की स्थिति का सामना कर रहे हैं।

परेशानी या वरदान: मानसून का जल्दी आना, सिर्फ मौसम का बदलाव नहीं बल्कि हमारे पर्यावरण और जलवायु में हो रहे बड़े बदलावों का भी संकेत है। विशेषज्ञों के अनुसार यह जलवायु परिवर्तन वैश्विक तापमान और समुद्री परिस्थितियों के मिले-जुले प्रभाव का नतीजा है। समुद्री सतह के तापमान के अनुकूल बदलाव पड़ा है। समुद्र का टेंपरेचर सामान्य से ज्यादा रहा, जिसके कारण मानसूनी पश्चिमी हवाएं तेजी से सक्रिय हो गईं।

चिंता का कारण: मानसून का जल्दी आना हालांकि कृषि, वाणिज्य जैसे क्षेत्रों के लिए अच्छा हो सकता है। लेकिन इसके अनियमित-बिगड़ते पैटर्न से बाढ़, लैंडस्लाइड, जलजनित बीमारियां, महामारी जैसी समस्याएं उत्पन्न होने का खतरा भी हो सकता है।

जल्दी आने के कारण: देश में मानसून के जल्दी आने को मौसम-वैज्ञानिक ग्लोबल वार्मिंग का असर मान रहे हैं। जिसके प्रति हमें सजग होना और समुचित कदम उठाने जरूरी हैं।

लानीना और अलनीनो का प्रभाव: यह प्रशांत महासागर के तापमान से जुड़ा सिस्टम है। जब प्रशांत महासागर का तापमान ज्यादा गर्म हो जाता है तो उसे अलनीनो कहते हैं, जो भारत के मानसून को कमजोर कर देता है। जब महासागर ठंडा होता है तो वह लानीना कहलाता है, जो मानसून को मजबूत करता है। चूंकि इस साल न ज्यादा गर्मी है और न ज्यादा ठंडक है। यानी ईएनएसओ न्यूट्रल है और यही हालात भारत के मानसून के लिए फायदेमंद है।

इंडियन ओशन डायपोल का पॉजिटिव होना: कुछ वैज्ञानिक मानते हैं कि आईओडी अरब सागर में नमी के जमाव को बढ़ाता है, जिससे मानसून की हवाएं तेज होती हैं और यह मानसून के जल्दी आने का कारण भी बनता है। तो कुछ वैज्ञानिक इसे भारतीय महासागर के पश्चिमी हिस्से यानी अफ्रीका की तरफ और पूर्वी हिस्से यानी इंडोनेशिया की तरफ पानी का तापमान से जोड़ते हैं। वस्तुतः इनके तापमान में फर्क मिलता है। अगर पश्चिमी हिस्सा गर्म होता है और पूर्वी हिस्सा ठंडा तो यह पॉजिटिव आईओडी कहलाता है। यह मानसून के लिए अच्छा होता है यानी बादल बनने, बारिश बढ़ाने में मदद करता है। जबकि इसके विपरीत यानी पश्चिम हिस्सा ठंडा और पूर्वी हिस्सा गर्म हो तो यह नेगेटिव आईओडी कहलाता है और यह मानसून को रोकता है। 2025 में अभी आईओडी भी न्यूट्रल है। मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि अगस्त-सितंबर तक यह हल्का पॉजिटिव हो सकता है, जो मानसून को और बढ़ा सकता है।

जेट स्ट्रीम में बदलाव: मानसून की हवाएं यानी ऊपरी स्तर की हवाओं में बदलाव से भूमध्य रेखा के ऊपर से हवाएं तेजी से भारत की ओर चलती हैं, जिससे नमी से भरी हवाएं पहले पहुंचकर मानसून जल्दी ले आती हैं। एक्सपर्ट्स का मानना है कि सोमाली जेट हवाएं मॉरिशस और मेडागास्कर से उठती हैं। जो सीधे अरब सागर से होते हुए भारत के पश्चिमी तट यानी केरल, कर्नाटक, गोवा और महाराष्ट्र तक आती हैं। 2025 में ये हवाएं असामान्य रूप से तेज हैं।

ग्लोबल वार्मिंग से बदला मानसून पैटर्न: ग्लोबल वार्मिंग की वजह से वातावरण और महासागरों का तापमान लगातार बदल रहा है। यह बदलाव मानसून के समय और तीव्रता को सीधे प्रभावित करता है। इससे उसका चक्र बदल जाता है। इसके अलावा बीते मई महीने में अरब सागर और बंगाल की खाड़ी में भारी नमी देखी गई, जिससे बादलों को बनने में ज्यादा देर नहीं लगी। इसके साथ कर्नाटक-गोवा तट के पास बने साइक्लोनिक सिस्टम की वजह से मानसून जल्दी आ गया। *

मानसून के प्रकार: भारतीय मानसून उन हवाओं को कहते हैं, जो ग्रीष्म ऋतु में तापमान ज्यादा होने के कारण बंगाल की खाड़ी, हिंद महासागर और अरब सागर में नमी के बढ़ने से सक्रिय हो जाती हैं। ये हवाएं दक्षिण-पश्चिम और दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पूर्व की ओर चलती हैं और ठंड के दिनों में विपरीत दिशा में यानी समुद्र की ओर बहती हैं। इसके आधार पर भारत में मानसून मूलतया दो तरह के होते हैं। दक्षिण-पश्चिम मानसून (जून से सितंबर तक) ये मानसूनी हवाएं भारत में सामान्यतया एक जून को सबसे पहले केरल में प्रवेश करती हैं और वहां बारिश करती हैं। इसके बाद यह धीरे-धीरे उत्तर दिशा में बढ़ता है। फिर जून का अंत तक आते-आते यह देश के ज्यादातर हिस्सों पर छा जाती है। उत्तर-पूर्वी मानसून, ऋतु-परिवर्तन होने पर ये हवाएं विपरीत दिशा की ओर यानी समुद्र की ओर बहती हैं। ये हवाएं आमतौर पर सितंबर-अक्टूबर माह तक वापस चली जाती हैं।

चिंतन / यशवंत कोठारी

भारतीयता के मूल में निहित पर्यावरण संरक्षण

भारतीय संस्कृति या कहें भारतीयता में प्रारंभ से ही पर्यावरण को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। हमारी संस्कृति में वृक्ष, पेड़-पौधों, जड़ी-बूटियों को देवता माना गया है। पवित्र और देवतुल्य वृक्षों की प्राचीन परंपरा भारतीयता के साथ गुंथी हुई है। वास्तव में भारतीयता किसी व्यक्ति विशेष से नहीं प्रकृति, पर्यावरण, सांस्कृतिक चेतना और विरासत से जुड़ी हुई है। तमाम विविधताओं के बावजूद भारतीयता के रक्षकों, पोषकों ने वृक्षों को पूजने की, उन्हें आदर देने की एक ऐसी परंपरा आरंभ की, जो भारतीयता में रच-बस गई है। वृक्षों के महत्व को प्रतिपादित करते हुए हमारी संस्कृति में अनेक परंपराएं और प्रथाएं विकसित की गईं जो वृक्षों, पर्यावरण, संस्कृति, सुहाग, पूजा-पाठ, धार्मिक अनुष्ठान आदि से जोड़ दी गईं। ये सभी चीजें कालांतर में भारतीयता का पोषण करने वाली सिद्ध हुईं।

पेड़-पौधों की करते हैं पूजा: देश के कुछ आदिवासी क्षेत्रों में विवाह के समय वर-वधू एक पौधा लगाते हैं। माना जाता है कि जैसे-जैसे वृक्ष हरा-भरा होकर विकसित होता है, दांपत्य जीवन में भी सुख और संपन्नता बढ़ती जाती है। बड़ के पेड़ को सुहाग प्रदान करने वाला माना गया है। उत्तर भारत में वट वृक्ष की पूजा का त्योहार मनाया जाता है। पीपल के वृक्ष पर भगवान विष्णु का वास माना जाता है। पलाश के वृक्ष के नीचे शीतला माता का वास माना गया है। इसी प्रकार आंवला, तुलसी, केला आदि कई पौधों की पूजा-अर्चना का विधान भारतीय संस्कृति में मौजूद है। यह भारतीयता का एक मोहक रूप है। पीपल के वृक्ष को रामायण में भी मान्यता दी गई है। तुलसी की पवित्रता, औषधीय उपयोगों और महत्व के बारे में कई प्राचीन पुस्तकों में वर्णन मिलता है।

इससे सिद्ध होता है कि भारतीय संस्कृति में तुलसी के पौधे को कितना महत्वपूर्ण पौधा माना जाता रहा है। भारतीयता की अनेक विविधताओं के बावजूद वृक्षों का संरक्षण, उनकी पूजा-अर्चना का विधान है।

भारतीयता का अरण्य उत्सव: वृक्षों के प्रति हमारी यह श्रद्धा अनादिकाल से चली आ रही है। अरण्ये ते पृथिवि स्येनमस्तु। अर्थात हे पृथ्वीमाता, तुम्हारे जंगल, हमें आनंद, उत्साह से भर दें। यही श्रद्धा और आदर का भाव बार-बार हमें भारतीयता की मूल भावना से भी जोड़ता है। भारतीयता, जो हम सभी के जीवन से जुड़ी हुई है। भारतीयता यानी हरी-भरी वसुंधरा, हरियाली से सजे वनप्रदेश, कामदेव का वसंत, चटकते फूल, श्रंगार से ओत-प्रोत वन, मादक गंधयुक्त समीर, आजादी से उड़ते पक्षी, कोयल की मीठी वाणी, कुंलाचें भरते हिरण, नाचते मोर, झरने, झीलें, कलकल करती नदियां, ये सभी सुंदर पर्यावरण बनाते हैं और बनाते है भारतीयता का एक संपूर्ण फलक। फलक में उपस्थित होते हैं अनेक प्रकार के रंग। प्रकृति का यह उत्सव भारतीयता का मौलिक स्वरूप है। शायद ही विश्व के अन्य किसी भाग या देश की संस्कृति में पर्यावरण को इतना महत्वपूर्ण माना गया है।

हम समझें अपने दायित्व: प्राचीन काल में हुए हमारे ऋषि-मुनियों ने भारतीयता की महक से परिपूर्ण पर्यावरण की कल्पना की थी। यदि किसी वृक्ष को काटना बहुत ही जरूरी हो जाता तो वृक्ष पर रहने वाले पशु-पक्षियों से क्षमा याचना कर मंत्र पढ़ कर सर्वजनहिताय वृक्ष को काटा जाता था। पर्यावरण के संतुलन को बनाए रखने, उसे पूर्ण रूप से प्रकृति के अनुकूल रखने तथा विकास के साथ एक तादात्म्य और सामंजस्य रखने की प्रेरणा भारतीयता देती है। प्राचीन शास्त्र, साहित्य, संस्कृति, कला जो कुछ भी इस भारत भूमि पर विद्यमान रहा वह सब भारतीयता से परिपूर्ण है और यही बात प्रकृति, पर्यावरण तथा वातावरण पर भी लागू होती है। यह बेहद खेद का विषय है कि भौतिकवादी उपभोक्ता संस्कृति ने सभी प्राचीन भारतीय मूल्यों को नष्ट कर दिया है। प्रकृति के संरक्षण की बात कोई नहीं करना चाहता है। लेकिन हम सब कभी न भूलें कि अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए भी पेड़-पौधों को लगाना, उनका संरक्षण करना, जीव-जंतुओं, पेड़-पौधों की रक्षा सब कुछ हमारा नैतिक दायित्व है, भारतीयता का कर्तव्य है। अगर हम इस कर्तव्य को पूरा कर सकें तो एक शस्य श्यामला हरित भूमि हमारे चारों ओर मुस्कुराएगी। *

कविता / अलका सोनी

नदी सबको देती है

नदी सबको देती है
बहुत कुछ...
जल, जंगल, जमीन
मछलियां, सूर्य को
अर्घ्य देने की जगह।
उसी तरह उसने
मुझे भी बहुत कुछ दिया
लेकिन मैंने देर से
देखा और समझा यह सब।
तब आश्चर्य हुआ कि
वो तब भी देती रहती है
जब हम नहीं जानते
उसका देते जाना।
यह सब देख
मन में आने लगती है
बस एक ही बात कि
नदी जो सबको देती है
कुछ न कुछ
बदले में पाती है
उसे नहीं समझे
जाने की
कई वजहें।

लघुकथाएं

मेरे नाम का पेड़

उसने मेरी बात काटते हुए अचानक पूछा, 'यह बताइए, क्या आपने अपने जीवन में कोई पेड़ लगाया है?'

मैंने सिर पर हाथ फेरा, बगलें झांकीं, तभी सन्नाटे को चीरती उसकी आवाज आई, 'आठ मन लकड़ी का बोझ सिर पर उधार लेकर जाओगे ऊपर?'

'तुमने जो इतने सारे पेड़ लगा रखे हैं। एक हमारे नाम का भी लगा दो।' मैंने बचना चाहा। वह मुझे और जलील न करे इसलिए मैंने बात घुमाई, 'अरे याद आया। एक बरगद के पेड़ की पौध तुमने मेरे नाम से खरीदी थी, उसका क्या हुआ?'

वह कुछ आश्चर्य से बोली, 'अब पंद्रह साल बाद तुम्हें उसकी याद आ रही है?'

'आखिर बताओ तो हुआ क्या था?' मैंने जोर देकर पूछा। 'उसकी तो कहानी हो गई थी।' वह बोली।

'हुआ क्या था?' मुझे उत्सुकता हुई।

'वो पापा की नजर उस पौधे पर पड़ी तो पूछ बैठे कि तो तुम ले ही आईं बरगद। चलो, मैं इसे अभी गांव के बाहर मेन रोड पर रोप देता हूं।' उसने कहानी बताई।

'तुमने कहा नहीं कि यह मेरे नाम का पेड़ है, किसी की अमानत है।' मैंने कहा।

'मुगले आजम के सामने मुंह खोलना इतना आसान था क्या? वो तो सीधे चिनवा देते।' वह कंधे उचका कर बोली। थोड़ी देर खामोशी रही फिर उसने धीरे से कहा, 'सच बताऊं, जब भी मैं गांव जाती हूं और इंट्री पर वह बरगद का पेड़ थके-हारे लोगों को अपने साए की आगोश में समेटे दिखता है तो मैं कार रुकवा कर पेड़ देर तक निहारती हूं। किसी ने यात्रियों की सेवा के लिए एक चाय-पान की गुमटी भी डाल ली है। प्रधान जी ने गर्मी में प्यासों के वास्ते एक हैंडपंप भी लगवा दिया है। किसी दिन आप भी मेरे साथ चलिए, आपको पेड़ देखकर बहुत खुशी होगी।'

मैं सोचने लगा कि मरने के बाद बरगद की लकड़ी से जलाया जाता है कि नहीं? *

-प्रेमेंद्र श्रीवास्तव

विज्ञापन

एक व्यक्ति ने अखबार में विज्ञापन छपवाया, 'पांच साल का यह लड़का, जिसकी फोटो दी जा रही है, कल शाम से घर से लापता है। किसी को यह बच्चा दिखाई दे या मिले तो दिए गए फोन नंबर पर सूचित करें। सूचना देने वाले को उचित इनाम दिया जाएगा।'

दूसरे दिन ही उस व्यक्ति के फोन की घंटी बजी। आवाज आई, 'आपने अखबार में बच्चे की गुमशुदगी का विज्ञापन दिया है। उसी के संबंध में बताना चाहता हूं कि आपका बच्चा कल से मेरे पास है, आप तुरंत आकर ले जाएं।' 'आप कौन बोल रहे हैं और कहां से बोल रहे हैं?' व्यक्ति ने जल्दी से पूछा।

'मैं सुखद वृद्धाश्रम से रघुबीर बोल रहा हूं...।' जवाब मिला।

यह सुनकर व्यक्ति की आंखें नम हो गईं। उसने तुरंत अपनी पत्नी से कहा, 'गुड्डू मिल गया है, वह वृद्धाश्रम में अपने दादा जी के पास है।' *

-गोविंद भारद्वाज

पत्रिका चर्चा / विज्ञान भूषण

प्रेम का साहित्यिक प्रवाह

नवोदित प्रवाह पत्रिका का वार्षिकांक प्रेम विशेषांक के रूप में प्रकाशित होकर आया है। यह अंक नामचीन और नवोदित लेखकों की रचनाशीलता से भरा-पूरा है। यहां संकलित रचनाओं के द्वारा प्रेम के मनोवैज्ञानिक विवेचन, उसके दार्शनिक पहलू, उसकी ऐंद्रिक व्याख्या और उसकी आत्मानुभूति के अलग-अलग आयामों से रूबरू हुआ जा सकता है। वैसे तो इस अंक में प्रेम पर अच्छी कहानियां, लघुकथाएं, समीक्षाएं और लेख पठनीय हैं ही, लेकिन खासतौर पर काव्य खंड बहुत ही समृद्ध है। इसमें प्रेमाधारित कई बेहतरीन कविताएं, गजलें, दोहे और गीत पाठक को प्रेमरस से सराबोर कर देते हैं। लाजवाब गीत और गजल खंड के अलावा कविता खंड में आलोक धन्वा, अच्युतानंद मिश्रा, अल्पना सिंह और आरती आस्था की कविताएं मन में ठहर जाती हैं।

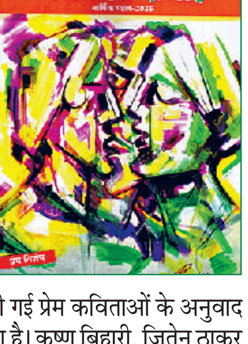

विभिन्न भारतीय भाषाओं में लिखी गई प्रेम कविताओं के अनुवाद ने इस अंक को संग्रहणीय बना दिया है। कृष्ण बिहारी, जितेन ठाकुर और रेणु हुसैन की कहानियां विशेष रूप से पठनीय हैं तो प्रेम पर अलग-अलग कोणों से लिखे गए लेखों में प्रेम की शाश्वतता को सलीके से व्यक्त किया गया है। *

पत्रिका: नवोदित प्रवाह (वार्षिक पहल 2025-प्रेम विशेष), **प्रधान संपादक:** रजनीश त्रिवेदी 'आलोक', **मूल्य:** 100 रुपए, **संपादकीय कार्यालय:** देहरादून, उत्तराखंड

इन गर्मी की छुट्टियों को बिताने के लिए अगर आप किसी प्राकृतिक, शांत, सुरम्य स्थान पर जाना चाहते हैं, तो माउंट आबू आपके लिए परफेक्ट डेस्टिनेशन हो सकता है। यहां आपको ऐतिहासिक मंदिर, प्राकृतिक झीलों के साथ-साथ कई मनोरम नजारे देखने को मिलेंगे।

प्राकृतिक सौंदर्य-आध्यात्मिक सुकून का संगम माउंट आबू

सैर-सपाटा / अंशु सिंह

प्राकृतिक सुंदरता और अध्यात्म का अनुपम संगम स्थल है राजस्थान का हिल स्टेशन माउंट आबू। मरुस्थल की वीरानियत में एक शीतल तपोभूमि, जहां बिखरी है अरावली की हरियाली। फैला है, नक्की झील का अप्रतिम सौंदर्य। प्रदेश का एकमात्र हिल स्टेशन, जिसका कण-कण कर लेता है सम्मोहित। गर्मी हो, सर्दी या हो बरसात, माउंट आबू में हर मौसम का है अपना अलग आनंद...।

अरावली के मध्य बसा: अरावली पर्वत श्रंखला के मध्य में बसे माउंट आबू में प्रकृति का जनमानस के साथ कुछ ऐसा सामंजस्य स्थापित है कि 'अद्भुत' के अतिरिक्त अन्य शब्द नहीं सूझता। यहां के वायुमंडल में ही पसरी है सुकून और शांति। मौसम का ताप भी मनोनुकूल नर्म है। रेगिस्तानी राज्य के अन्य हिस्सों की तरह गर्म नहीं है यह स्थान। आखिरकार, प्रदेश का यह एकमात्र हिल स्टेशन जो है। सिरोही जिले में स्थित इस पठारी क्षेत्र को कुदरत ने नदी, झील, झरने सभी की सौगात दे रखी है। यह प्रदेश का सिरमौर है, जिसे भारत ही नहीं, संसार की प्राचीनतम पर्वत श्रंखलाओं में से एक अरावली, उत्तर से दक्षिण दो हिस्सों में विभाजित करती है। केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्रालय ने पर्यावरणीय दृष्टिकोण से इसे संवेदनशील क्षेत्र भी घोषित कर रखा है।

भारत की आध्यात्मिक भूमि: माउंट आबू ऐतिहासिक काल से ही अलग-अलग धर्मावलंबियों की कर्मभूमि और तपोभूमि रहा है। आज भी यह स्थान हिंदू और जैन धर्मावलंबियों का पवित्र तीर्थस्थल है। कथानुसार, जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर माउंट आबू आए थे, जिसके बाद से यह जैन अनुयायियों का विशेष तीर्थस्थान बन गया है। माउंट आबू का प्राचीन नाम अर्बुदांचल है। पुराणों में इसका उल्लेख अर्बुदा अरण्य (अर्थात अर्बुदा के वन) के नाम से भी मिलता है। बाद में यही 'अर्बुदा', 'आबू' में परिवर्तित हो गया। ऐसी मान्यता है कि ऋषि वशिष्ठ का जब विश्वामित्र से मतभेद हो गया था, तब वे माउंट आबू के दक्षिणी भाग में आकर बस गए थे। उन्होंने पृथ्वी से असुरों के विनाश के लिए यहां यज्ञ का आयोजन भी किया था। इनके अलावा, आध्यात्मिक संस्थान ब्रह्माकुमारीज का अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय भी यहां स्थित है।

मनमोहक नक्की झील: पहाड़ों की छांव और अरावली की हरियाली के मध्य मचलती अति रमणीय नक्की झील को माउंट आबू का दिल कहा जाता है। 11000 मीटर की ऊंचाई पर स्थित ढाई किलोमीटर लंबी यह झील कौतुहल पैदा करती है। एक किंवदंती के अनुसार, रसिया बालम नामक शिल्पकार और तत्कालीन राजा की बेटी एक-दूजे से प्रेम करते थे। लेकिन राजा की शर्त थी कि अगर शिल्पकार एक रात में झील की खुदाई कर देता है, तो वह अपनी पुत्री उससे ब्याह देंगे। रसिया ने यह चमत्कार कर दिखाया। हालांकि बाद में राजा ने अपनी बेटी उसे देने से इंकार कर दिया। दूसरी कथा के अनुसार, देवताओं ने बाली राक्षस से रक्षा के लिए अपने नाखूनों से इस झील का निर्माण किया था। इसलिए इसका नाम नक्की झील पड़ा। गरासिया जनजाति के लिए यह पवित्र झील आस्था की प्रतीक है।

बहुत प्रसिद्ध है सनसेट प्वॉइंट: फिल्म 'कयामत से कयामत तक' का एक खूबसूरत संवाद है, 'इस डूबते हुए सूरज ने हमें पहली बार मिलाया था। यही हमें एक दिन हमेशा के लिए मिला देगा।' अभिनेता आमिर खान और जूही चावला के इस संवाद में जिस 'डूबते हुए सूरज' का जिक्र हो रहा, वह यहीं माउंट आबू के सनसेट प्वाइंट पर शूट की गई थी। यहां पास ही में स्थित हनीमून प्वॉइंट नव विवाहितों का पसंदीदा स्थान है। माउंट आबू आने वाले पर्यटकों के लिए सनसेट प्वॉइंट रोमांच से भरपूर एक ऐसा मनोरम स्थल है, जहां से पल-पल रंग बदलते आकाश एवं बादलों की ओट में छिपते-ढलते सूर्य के विस्मयकारी दृश्य को देखा जा सकता है। यहां आने वाले पर्यटक इन नजारों को अपनी यादों के साथ-साथ अपने कैमरे में भी जरूर कैद करते हैं।

विश्व प्रसिद्ध दिलवाड़ा जैन मंदिर: अपनी माउंट आबू यात्रा के दौरान आप दिलवाड़ा जैन मंदिर अवश्य जाएं। 11वीं से 13वीं शताब्दी के दौरान निर्मित दिलवाड़ा जैन मंदिर, जैन वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण है। मंदिर का प्रवेशद्वार गुंबद वाले मंडप से होकर गुजरता है। सामने एक वर्गाकार भवन है, जिसमें छह स्तंभ और दस हाथियों की प्रतिमाएं हैं। पांच मंदिरों के इस समूह में विमल शाह द्वारा निर्माण कराया गया मंदिर, सबसे पुराना है, जो जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर को समर्पित है। इसके अलावा, 22वें तीर्थंकर नेमिनाथ को समर्पित लून वासाही मंदिर भी दर्शनीय है। यहां एक अद्भुत देवरानी-जेठानी मंदिर भी है, जिसमें भगवान आदिनाथ एवं शांतिनाथ जी की मूर्तियां स्थापित हैं। संपूर्ण मंदिर एक प्रांगण के अंदर घिरा हुआ है, जिसमें छोटे स्तंभों की दोहरी पंक्तियां हैं। यहां फूल-पत्तियों और अन्य मोहक डिजाइनों से अलंकृत, नक्काशीदार छतें, पशु-पक्षियों की शानदार आकृतियां, सफेद स्तंभों पर बारीकी से उकेरी गई बेलें, जालीदार नक्काशी से सजे तोरण और जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाएं हैं।

पीस पार्क में प्रकृति का आनंद: ब्रह्मा कुमारी का पीस पार्क, विविध प्रजातियों के पेड़-पौधों के बीच आपको एक अलग ही जगत में होने का एहसास कराएगा। यहां फूलों के साथ-साथ फलों के भी उद्यान हैं। यहां गुलाब, नीबू, बांस समेत अनेक वृक्ष देखे जा सकते हैं। खूबसूरत रॉक गार्डन एवं अन्य लैंडस्केपिंग को देखना भी कम दिलचस्प नहीं है। पार्क में ध्यान के लिए विशेष कोना भी है। *

कैसे जाएं: माउंट आबू का सबसे निकटतम हवाई अड्डा उदयपुर 185 किलोमीटर, जबकि अहमदाबाद 235 किलोमीटर दूर है। सबसे नजदीकी रेलवे स्टेशन आबू रोड 28 किलोमीटर की दूरी पर है, जो अहमदाबाद, दिल्ली, जयपुर और जोधपुर से जुड़ा है। यह सड़क मार्ग से देश के सभी प्रमुख शहरों से जुड़ा है। दिल्ली के कश्मीरी गेट बस अड्डे से माउंट आबू के लिए सीधी बस सेवा उपलब्ध है। राजस्थान राज्य सड़क परिवहन निगम की बसें दिल्ली के अलावा अन्य शहरों से माउंट आबू के लिए अपनी सेवाएं मुहैया कराती हैं।

कब जाएं: आप गर्मी या सर्दी कभी भी यहां जा सकते हैं। नवंबर से फरवरी के बीच यहां सर्दी का मौसम होता है। काफी पर्यटक आते हैं। इसके अलावा, अप्रैल से जून के बीच भी यहां घूमने जाया जा सकता है। अगर मानसून का मजा लेना है, तो जुलाई से सितंबर के महीने में यहां की योजना बना सकते हैं।

किसी को उबासी लेते देख आपको भी जम्हाई आने लगती है, है ना! वास्तव में कुछ आदतें, हरकतें या प्रतिक्रियाएं ऐसी होती हैं, जो किसी दूसरे को करते देख, ठीक वैसा ही करने के लिए हमारा भी मन मचल उठता है। ऐसा क्यों होता है, जानिए।

इन एक्टिविटीज को देख मन अपना भी मचलता है!

जीवनशैली / शिखर चंद जैन

कई बार अनजाने में दूसरे की किसी एक्टिविटी को देखकर हम भी वैसा करने लगते हैं या वैसा करना चाहते हैं। व्यवहार विशेषज्ञों, समाजशास्त्रियों और हेल्थ एक्सपर्ट्स ने कुछ ऐसी इश्यूज का पता लगाया है। आप भी इनके बारे में जानिए।

फ्रेंड जैसे सामान: 'जर्नल ऑफ न्यूरोसाइंस' में प्रकाशित एक शोध के मुताबिक लोगों को उस चीज की सबसे ज्यादा चाह होने लगती है, जो उनके किसी प्रियजन या मित्र के पास हो। भले ही आपके पास पहले ही एक से एक टी-शर्ट, सलवार सूट या फुटवेयर हों, लेकिन फ्रेंड के पास कोई नया पेयर देखते हैं, तो आपका भी मन मचल उठता है। मनोवैज्ञानिक कहते हैं, 'हम किसी चीज के स्वामित्व को जब सेल्फ एस्टीम से जोड़कर देखने लगते हैं, तब ऐसी इच्छा जाग्रत हो जाती है।' कई बार हम इन चीजों को प्रेस्टीज इश्यू बना लेते हैं।

बालों पर हाथ फेरना: व्यक्तित्व विकास के विशेषज्ञ ग्लेन विल्सन ने अपनी किताब 'इंट्रोड्यूसिंग बॉडी लैंग्वेजः ए प्रैक्टिकल गाइड' में लिखा है कि दो व्यक्ति जब एक-दूसरे से व्यक्तिगत बातें कर रहे होते हैं, तो उनमें एक-दूसरे को देखकर अपने बालों में हाथ फेरने से खेलने की इच्छा बलवती हो उठती है। इस स्थिति को मनोवैज्ञानिक 'सिंक्रोनी' या 'पोश्चरल ईको' कहते हैं। इनका कहना है कि हम अपने सोशल बिहेवियर का काफी कुछ अपने नजदीकी लोगों से देखकर सीखते हैं, इसलिए, जाने-अनजाने में हम उनकी बॉडी लैंग्वेज की नकल कर बैठते हैं।

खुजली की तलब: एक अध्ययन के मुताबिक अपने सामने मौजूद किसी व्यक्ति को सिर या कान खुजलाते हुए देखने पर वहां मौजूद दूसरे लोगों की ऐसा करने की इच्छा करती है। मनोवैज्ञानिक कहते हैं, 'हमारे अवचेतन मन में किसी को खुजली करते देख या जम्हाई लेते देख, ऐसा दोहराने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। ऐसा ही किसी को पानी पीते देखकर या टॉयलेट के लिए उठता देखकर किसी सार्वजनिक स्थान (जैसे सिनेमा हॉल, क्लास रूम या स्टेडियम) में होता है।

खुद को बीमार महसूस करना: कभी आपके साथ ऐसा जरूर हुआ होगा कि आपके किसी मित्र ने अपनी बीमारी के कुछ लक्षण आपको बताएं हों और आपने भी वैसा ही महसूस किया हो। रिसर्च बताते हैं कि हम दूसरों से 'डर' बहुत जल्दी पिकअप कर लेते हैं। आपने देखा होगा कि कई बार लोग बिना कारण जाने ही कुछ लोगों को सड़क पर दौड़ते देख, खुद भी दौड़ने लगते हैं। पेनसिलवेनिया विवि के मनोवैज्ञानिक लौरेन नेपोलिटानो कहते हैं, 'आप एक साधारण उदाहरण से इसे समझ सकते हैं। किसी संगीत समारोह में बेहद तेज संगीत को जब आप दूसरों को एंज्वॉय करते देखते हैं, तो खुद भी इसे एंज्वॉय करने लायक समझते हैं लेकिन पांच-दस लोग इसके 'लाउड' होने की शिकायत करते हुए कान पर हाथ धरते दिख जाते हैं तो आप भी अपने कान ढंक लेते हैं।

तनाव महसूस करना: 'सोशल न्यूरोसाइंस' जर्नल में प्रकाशित एक रिसर्च के मुताबिक सहकर्मी का तनाव देखकर अगल-बगल मौजूद दूसरे लोगों में भी स्ट्रेस हार्मोन रिलीज होने लगता है। दूसरे को टेंशन या तकलीफ में देखकर दुखी या तनावग्रस्त होना मानवीय प्रवृत्ति है। ठीक ऐसा ही क्रोध के मामले में भी होता है। दूसरे का क्रोध देखकर हम भी उत्तेजित हो जाते हैं और क्रोध भरे स्वर में बात करने लगते हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ विस्कॉन्सिन-मेडिकल की शोधकर्ता एलिजाबेथ क्रुसमार्क के अनुसार, 'भावनात्मक संक्रामकता शरीर में घटित होने वाले केमिकल सिग्नल्स की वजह से उत्पन्न होती है। यही वजह है कि किसी को तनाव, क्रोध या बेचैनी में देखकर हम भी वैसा ही महसूस करने लगते हैं।'

कम या ज्यादा भोजन करना: कई अध्ययनों में पाया जा चुका है कि किसी रेस्तरां या पार्टी में आप अगर ज्यादा भोजन करने वाले लोगों के साथ हैं, तो आप भी ज्यादा मात्रा में भोजन कर लेते हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया में 12,000 से ज्यादा लोगों पर किए अध्ययन में पाया गया कि किसी समूह का एक व्यक्ति 'मोटा' हो जाए तो उसके नजदीकी लोगों में मोटापे की संभावना 57 फीसदी बढ़ जाती है। ठीक ऐसा ही सेहत के प्रति जागरूक और संयमित खान-पान करने वालों के साथ रहने से होता है। *

हंसना या मुस्कुराना

किसी सामूहिक कार्यक्रम के दौरान दूसरों को ठहाके मार कर देखना या एक व्यक्ति को मुस्कुराते हुए देखना स्वतः ही दूसरे लोगों को भी ठहाके मारने या मुस्कुराने के लिए प्रेरित कर देता है। खुशी या सकारात्मक प्रतिक्रिया भी उसी तरह दूसरों को प्रेरित करती है जैसे नेगेटिव एक्टिविटी करती है। मनोवैज्ञानिक कहते हैं हर क्रिया की प्रतिक्रिया इंसानी स्वभाव है। अगर कोई व्यक्ति आपको देखकर अच्छी टिप्पणी करता है, खुश होता है या मुस्कुराता है, तो आप खुद-ब-खुद ऐसा करने लग जाते हैं।

अनेक अध्ययनों से साबित हुआ है कि हमारी लापरवाही से प्रदूषित हो रहे वातावरण से अनेक बीमारियां पनप रही हैं। हम अपने पर्यावरण को प्रदूषणमुक्त बनाकर, सही जीवनशैली अपनाकर ही स्वस्थ रह सकते हैं। इसके लिए प्रयास हमें ही करने होंगे।

पर्यावरण बनाएं प्रदूषणमुक्त आप रहेंगे स्वस्थ-ऊर्जावान

दायित्व / डॉ. राकेश 'चक्र'

वर्षों से अनेक वैज्ञानिक अध्ययन इस बात को इंगित कर रहे हैं कि हम इंसान ही अपने पर्यावरण को प्रदूषित करते जा रहे हैं। यह जानते हुए भी कि यह प्रवृत्ति हमें विनाश की ओर ले जा सकती है, प्रकृति और पर्यावरण के विरुद्ध गैर जिम्मेदाराना कार्यशैली अपनाकर उसे प्रदूषित करते ही जा रहे हैं।

हमारी लापरवाही है जिम्मेदार: यह बहुत चिंता का विषय है कि हम अपनी रोजमर्रा की कार्यशैली से पर्यावरण को प्रदूषित करते जा रहे हैं। हमने प्रकृति के पंच तत्वों-अग्नि, वायु, आकाश, पृथ्वी और जल को प्रदूषित करके भारी नुकसान पहुंचाया है और निरंतर पहुंचाते ही जा रहे हैं। हालात यह हो चुके हैं कि पानी को आरओ से शुद्ध करके पीना पड़ रहा है या फिर फिल्टर्ड पानी की बोतल खरीदनी पड़ रही है। कैंसर के रोगियों में निरंतर वृद्धि हो ही रही है। पैदल चलना अब शान-शौकत के विरुद्ध माना जाता है। पचास-सौ मीटर के लिए भी वाहन का प्रयोग किया जाता है। इसी सुविधाभोगिता के चलते रोग और रोगियों का ग्राफ बढ़ रहा है।

हालात हो जाएंगे गंभीर: अगर हालात यही रहे, तब निकट भविष्य में हमें श्वास लेने के लिए हमेशा मास्क पहन कर चलना पड़ेगा। कदाचित अब जल्दी ही ऐसा भयावह समय आने वाला है कि हमें ऑक्सीजन का सिलेंडर साथ में लेकर चलना पड़ेगा, तब कहीं हम श्वास लेकर जीवित रहने के लिए संघर्ष कर पाएंगे। ऐसे में हमें चिंतन-मनन करना ही होगा कि हम किस दिशा और दशा की ओर बढ़ रहे हैं? इसमें सुधार के लिए पर्यावरण को स्वच्छ करने की शुरुआत हमें स्वयं से ही करनी होगी। यह तभी हो सकता है, जब हम अपने मन से पूरी तरह संकल्पित हो जाएं।

ऐसे करें खुद से शुरुआत: आने वाली भयावह स्थितियों से बचने के लिए सबसे पहले तो हम अपनी दिनचर्या में ही आमूल-चूल परिवर्तन करें। आहार-विहार को प्रकृति के अनुकूल ढालें। सुविधाभोगिता की वस्तुओं का प्रयोग उतना ही करें, जितना अतिआवश्यक हो। अपने आस-पास तुलसी, मनीप्लांट, स्नेकप्लांट, नीम, पीपल आदि के पौधे अधिक से अधिक रोपें और देखभाल करें। सुविधाभोगिता में कटौती करके ही बिजली की बचत की जा सकती है। 'एसी संस्कृति' भयावह प्रदूषण की ओर ले जा रही है। हम न भूलें एसी में प्रयुक्त होने वाली गैस वातावरण को प्रदूषित करती है। इसलिए जहां तक संभव हो एसी का प्रयोग न करें या बहुत सीमित मात्रा में करें।

स्वच्छता का रखें ध्यान: अपने घर के आस-पास सड़क और पार्क की स्वच्छता का भी ध्यान रखें। घर की रसोई से निकलने वाले सब्जियों और फलों के छिलके, चाय पत्ती आदि का खाद बनाएं, वह आसानी से बन जाता है। इसका तरीका यही है कि छिलके आदि को खाली गमले, प्लास्टिक के कट्टे या अनुउपयोगी बाल्टी, डब्बे आदि में भरते जाएं। जब वह आधा भर जाए तो उसमें ऊपर से मिट्टी भर दें। दो चार दिन थोड़ा-थोड़ा पानी डाल दें, मिट्टी के ऊपर कोई भी पौधा रोप दें। पौधा बढ़ता रहेगा और कचरा खाद में परिवर्तित होकर उपयोगी मिट्टी बनता रहेगा।

यथासंभव रोकें प्रदूषण: जरूरी नहीं कि कहीं भी जाने के लिए स्कूटर, बाइक या कार ही निकालें। आस-पास एक डेढ़ किलोमीटर की दूरी दस-पंद्रह मिनट पैदल चलकर तय कर सकते हैं। कुछ अधिक दूरी को साइकिल से भी पूरा कर सकते हैं। इससे हम स्वस्थ भी रहेंगे।

जीवनशैली में करें सुधार: कूड़ा-करकट यथास्थान पर ही एकत्र करें, इधर-उधर न फेंकें। धूम्रपान, गुटखा और मद्यपान आदि से बचें। ये सिर्फ वातावरण को ही नहीं हमारे शरीर के तंत्र को भी प्रदूषित कर देते हैं। *

साल 1975 देश के लिए सामाजिक-राजनीतिक दृष्टि से उथल-पुथल भरा रहा। हिंदी सिनेमा के लिहाज से भी वह वर्ष अभूतपूर्व रहा। उस वर्ष आई उन तीन फिल्मों 'दीवार', 'शोले' और 'जय संतोषी मां' से जुड़ी कुछ रोचक बातों पर एक नजर, जिसने सफलता और कमाई के झंडे तो गाड़े ही, हिंदी सिनेमा को नई दिशा भी दी।

तीन ब्लॉक बस्टर फिल्मों के 50 साल

शोले-दीवार-जय संतोषी मां

बड़ा पर्दा / मनोज प्रकाश

अब से पचास साल पहले यानी वर्ष 1975 में सिल्वर स्क्रीन पर तीन ऐसी हिंदी फिल्में रिलीज हुईं, जिसने कमाई और कामयाबी के नए कीर्तिमान स्थापित किए। आपातकाल का वह वर्ष देशवासियों की चेतना में, उनके जीवन में कई तरह के बदलाव लेकर आया। वहीं उस साल रिलीज हुई तीन सुपरहिट फिल्मों ने हिंदी सिने प्रेमियों को मनोरंजन और भक्ति का बेहतरीन तोहफा दिया। वह साल हिंदी फिल्म जगत के लिए मील के पत्थर की तरह रहा। उस साल बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचाने वाली तीन फिल्में थीं- 'दीवार', 'शोले' और 'जय संतोषी मां'। 2025 इन तीनों ही फल्मों की रिलीज का स्वर्ण जयंती वर्ष है।

दीवार लिखी सफलता की नई इबारत

वर्ष 1975 में 24 जनवरी को फिल्म 'दीवार' रिलीज हुई। यह उस दौर में एक नई तरह की फिल्म थी। फिल्म का कथानक सामाजिक मुद्दों को उठाते हुए कुछ इस तरह से रचा गया था कि इसने गरीबी, अन्याय, भ्रष्टाचार जैसे मुद्दों को विस्फोटक रूप से पेश किया। फिल्म में दो भाइयों के बीच खड़ी 'दीवार' ने दर्शकों को अपनी तरफ खूब खींचा। इसमें अमिताभ की 'एंग्री यंग मैन' इमेज के दर्शक कायल हो गए। सही अर्थों में इस फिल्म को न्यायप्रिय समाज का प्रतिबिंब कहा जा सकता है। 'दीवार' के डायलॉग्स आज भी सिने-प्रेमियों के बीच लोकप्रिय हैं। 'मैं आज भी फेंके हुए पैसे नहीं उठाता', 'जाओ पहले उस आदमी के साइन लेकर आओ..' जैसे डायलॉग्स सुनते ही सिनेमाघरों में दर्शकों की सीटियां और तालियां गूंजने लगती थीं। अन्याय के खिलाफ लड़ने वाले नायक के रूप में अमिताभ बच्चन को दर्शकों का भरपूर प्यार मिला। इसी फिल्म में शशि कपूर का डायलॉग 'मेरे पास मां है' दर्शकों को इमोशनल कर जाता है।

शोले तोड़े कामयाबी के रिकॉर्ड

15 अगस्त 1975 को रिलीज हुई 'शोले' को हिंदी फिल्म इतिहास के अब तक की सबसे बेहतरीन फिल्मों में से एक के रूप में गिना जाता है। जब यह फिल्म रिलीज हुई तो इसके सफल होने पर ही लोग शक कर रहे थे। लेकिन इस फिल्म को दर्शकों का भरपूर प्यार मिला। फिल्म ने सफलता के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए। इस फिल्म ने सौ सिनेमाघरों में अपनी रिलीज की सिल्वर जुबली और पचास से अधिक में गोल्डेन जुबली का रिकॉर्ड कायम किया। फिल्म निर्माण जगत में यह क्रांतिकारी बदलाव लाने वाली फिल्म मानी जाती है। फिल्म का वह दृश्य जिसमें जय (अमिताभ) वीरू (धर्मेंद्र) को कारतूस लाने के लिए कहता है, उसमें सिक्के का एक ही पहलू अभी तक दर्शकों को रोमांचित कर देता है। जहां कहीं दोस्ती निभाने की बात आती है, वहां जय-वीरू और 'शोले' का सिक्का दर्शक नहीं भूलते हैं। जय का बसंती (हेमा मालिनी) से पूछना, 'तुम्हारा नाम क्या है बसंती?' वीरू का टंकी वाला सीन और 'सुसाइड' वाला डायलॉग। गब्बर (अमजद खान) के डायलॉग्स, 'कितने आदमी थे?', 'तेरा क्या होगा कालिया?', बसंती (हेमा मालिनी) का डायलॉग, 'चल धन्नो, आज तेरी बसंती की इज्जत का सवाल है', ठाकुर (संजीव कुमार) पर फिल्माए गए दृश्य और संवाद। राधा (जया बच्चन) का चुलबुलापन और मौन। 'अंग्रेजों के जमाने के जेलर' (असरानी) और सूरमा भोपाली (जगदीप) के कॉमेडी सींस। फिल्म का एक-एक दृश्य, एक-एक पात्र, एक-एक डायलॉग, एक-एक गीत आज भी सिने प्रेमियों के जेहन में जीवंत है।

जय संतोषी मां जलाई भक्ति की अलख

'दीवार' और 'शोले' ने जहां हिंसा और बदले की भावना को प्रतिबिंबित किया, वहीं 'जय संतोषी मां' ने आस्था, भक्ति और विश्वास की जीत दिखाकर ब्लॉक बस्टर का तमगा हासिल किया। यह फिल्म 'शोले' के साथ ही यानी 15 अगस्त 1975 को रिलीज हुई थी। सामूहिक परिवार की कहानी में भाइयों की आपसी खींचतान के साथ इस फिल्म ने धर्म तथा आस्था का बेजोड़ संगम प्रस्तुत किया। आस्था, विनम्र भक्ति में रची-बसी 'जय संतोषी मां' ने भक्ति फिल्मों के एक ऐसे युग की शुरुआत की, जिसको पचास साल बाद भी भारतीय फिल्म उद्योग और समाज मानक मानकर चलता है। फिल्म में भजन और आरती के समय दर्शक एक साथ खड़े हो जाया करते थे। फिल्म समीक्षक इस बात को प्रमुखता से इंगित करते हैं कि फिल्म की रिलीज के बाद समाज में संतोषी माता के प्रति आस्था में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। फिल्म के भजन और आरती- 'मैं तो आरती उतारूं रे', 'यहां-वहां, जहां-तहां, मत पूछों कहां-कहां', 'करती हूं तुम्हारे व्रत मैं', 'मदद करो संतोषी माता' भक्ति संगीत में मील के पत्थर बन चुके हैं। आज भी इस फिल्म के गीत घरों और मंदिरों में भक्तिभाव से गाए, बजाए और सुने जाते हैं। *